नवंबर (द्वितीय) 2021 | ₹ 35.00

चंपक

टाइगर

J

VISIT…

FOR THE FIRST TIME, A COLLECTION OF 72 HANDPICKED STORIES

CHAMPAK IN ASSOCIATION WITH RUPA

HELP CHILDREN BE THEIR BEST SELVES, ONE STORY AT A TIME!

GET YOUR COPY NOW!

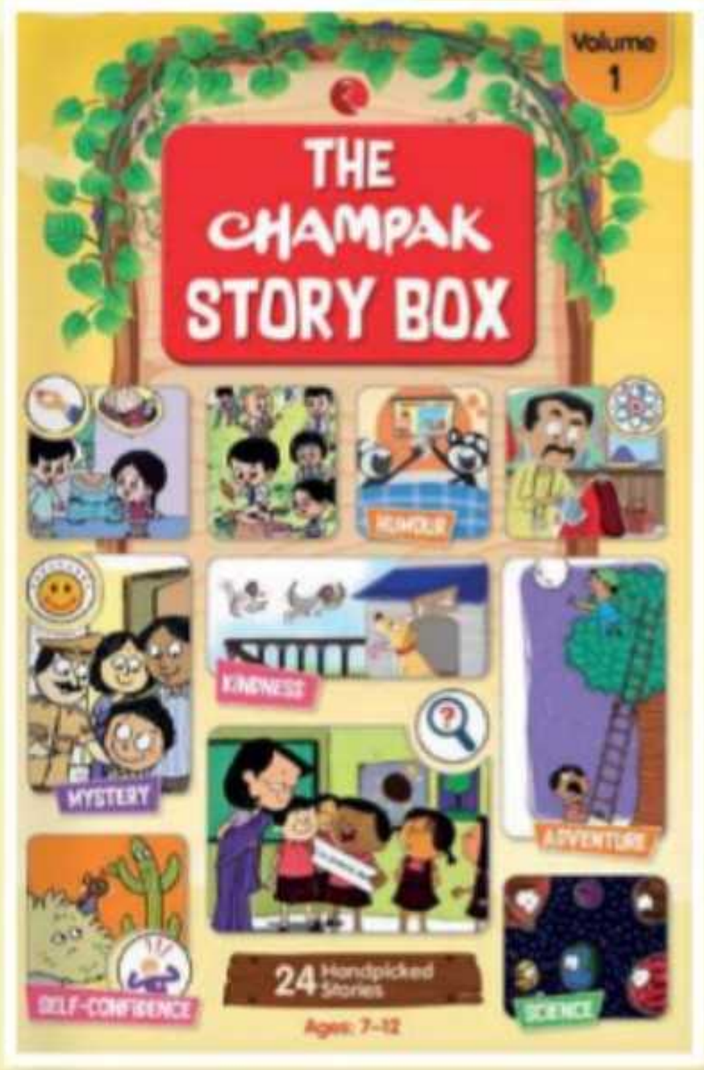

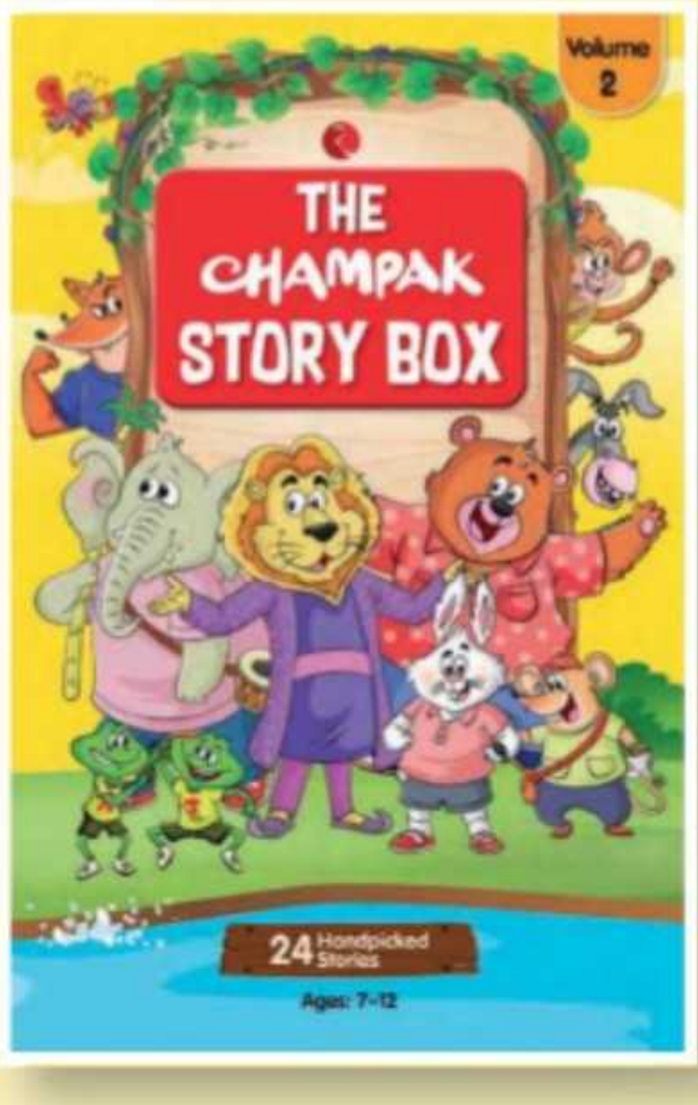

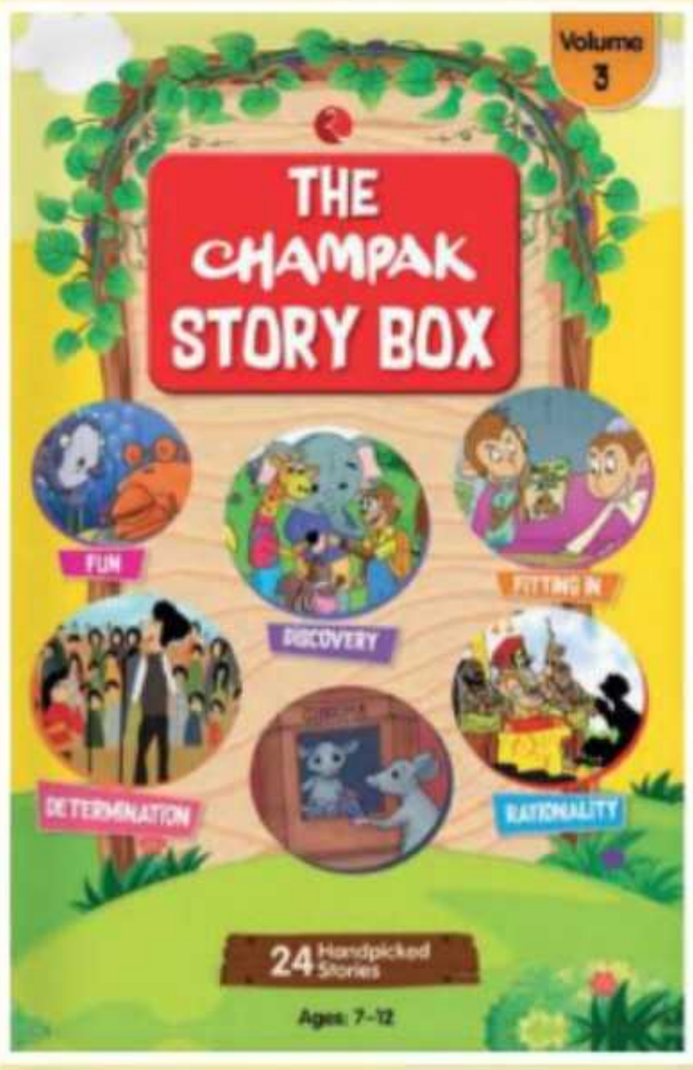

AGES: 7-12

AVAILABLE ON CHAMPAK.IN

& ALL LEADING BOOKSTORES ACROSS THE COUNTRY.

To subscribe: Call/SMS/WhatsApp: 8588843408 | Toll Free Number: 1800 103 880
visit www.champak.in/subscribe | email: subscription@delhipress.in

T& C apply

चंपक

नवंबर (द्वितीय) 2021 अंक : 1225

only books magazine

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

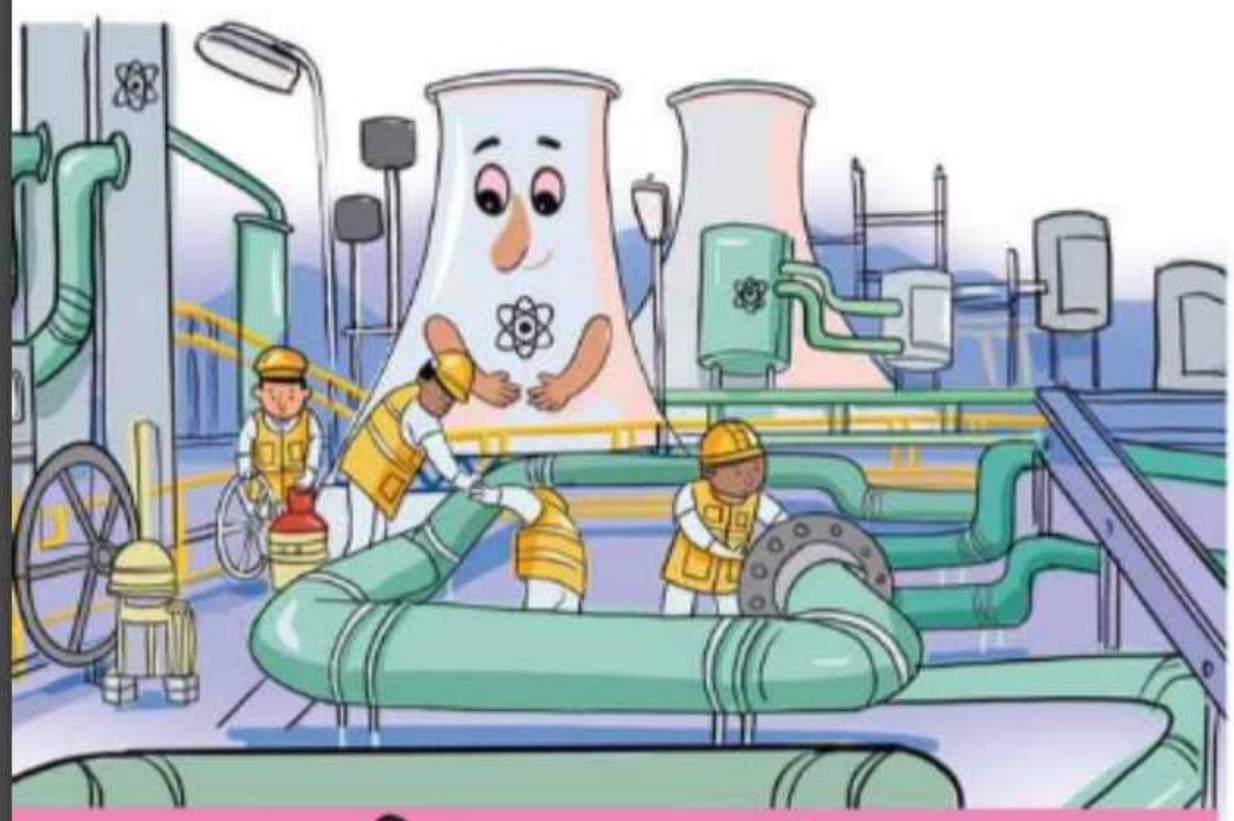

सुनो कहानी

गैंडे की उड़ान	4
बिजली घर	10
ऐन्नी का सपना	14
चीका का कैमरा	21
मददगार दोस्त	30
फिलो और वैली का खेल हुआ समाप्त	36
ड्रिंक का झूठ	47

मुखपृष्ठ

एक कप हौट चौकलेट, आरामदायक ऊनी कपड़े, किसी प्रियजन का साथ और एक जलती गरम अंगीठी सर्दियों के मौसम में अनुभवों के एहसास का सब से बेहतरीन वर्णन है. तुम्हें जाड़े के मौसम में क्या करना पसंद है? शेयर करना न भूलना.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	8
रास्ता बताओ	9
देखो हंस न देना	12
बताओ तो जानें	18
याददाश्त बढ़ाएं	20
ढूंढ़ें और गिनती करें	25
बिंदु मिलाओ	28
गिनती करें	29
ऊपर से यह कैसा दिखता है?	33
चित्र पूरा करें	34
स्मार्ट	35
पत्थरों को रंगें	42
छिपे चित्र ढूंढ़ें	43
अंतर बताओ	46

चित्र कथाएं

डमरू और ऐनर्जी ड्रिंक	13
चीकू	26
दादाजी और वर्ल्ड हैलो डे	40

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	19
नन्ही कलम से	44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएम पीपी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कहानी साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफ भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है.

वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 35.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 966, दो वर्ष रु. 1848. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/वाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नेगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा ग्रुपफ्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

only books magazine

गैंडे की उड़ान

कहानी • इंद्रजीत कौशिक

चंपकवन में सभी जानवर और पशुपक्षी मिलजुल कर बड़े प्रेम से रहते थे. कोई भी किसी को न तो तंग करता था और न ही परेशान करता था. सिवा रियो राइनो यानी गैंडे के.

उस के मोटे और बेडौल शरीर का सब मजाक उड़ाते थे.

लेकिन पिछले कुछ दिनों से जंगल के जानवरों के होश उड़े हुए थे. वे काफी परेशान थे, क्योंकि कहीं से दो शिकारी जंगल में घुस आए थे जो जानवरों को पकड़ कर अपने साथ ले जा रहे थे.

पिछली बार ये शिकारी आए थे तो बहुत से बंदरों को पकड़ कर ले गए थे. तब महाराज शेर सिंह ने उन्हें जंगल से खदेड़ दिया था.

लेकिन इस बार वे पूरी तैयारी के साथ आए थे. उन के पास जानवरों को डराने और उन्हें मारने के लिए बंदूकें भी थीं.

''हम अगली बार एक बड़ा सा पिंजरा ले कर आएंगे और उस में पक्षियों को डाल कर ले जाएंगे. फिर हम उन्हें विदेशियों को बेच कर खूब पैसे कमाएंगे. पिछली बार तो शेर ने हमें भगा दिया था पर इस बार ऐसा नहीं होगा, क्योंकि शेर यहां से जा चुका है और हमारे पास बंदूकें भी हैं.''

शिकारियों की बातें टीना स्लौथ ने सुन ली. वह समझ गई कि उस के साथी जानवरों की जान बड़े खतरे में है.

''आओ टीना आओ, कहो कैसे आना हुआ?'' रियो ने टीना को घबराया हुआ देख कर पूछा.

''कुछ नहीं, मुझे तो तुम्हारी पीठ पर बैठ कर सवारी करनी है,'' टीना ने कहा.

''तुम तो जानती ही हो कि मैं अपनी पीठ पर केवल पक्षियों को ही बिठाता हूं, क्योंकि वे मेरे कंधों पर बैठे सभी कीड़ों को खा जाते हैं,'' रियो ने उत्तर दिया.

''लेकिन अब ऐसा कभी नहीं हो पाएगा, क्योंकि तुम्हारे दोस्त पौप्पी तोते को शिकारियों ने पकड़ लिया है,'' टिना ने चिंतित स्वर में कहा.

''अभी भी तुम्हें केवल अपनी ही जान की

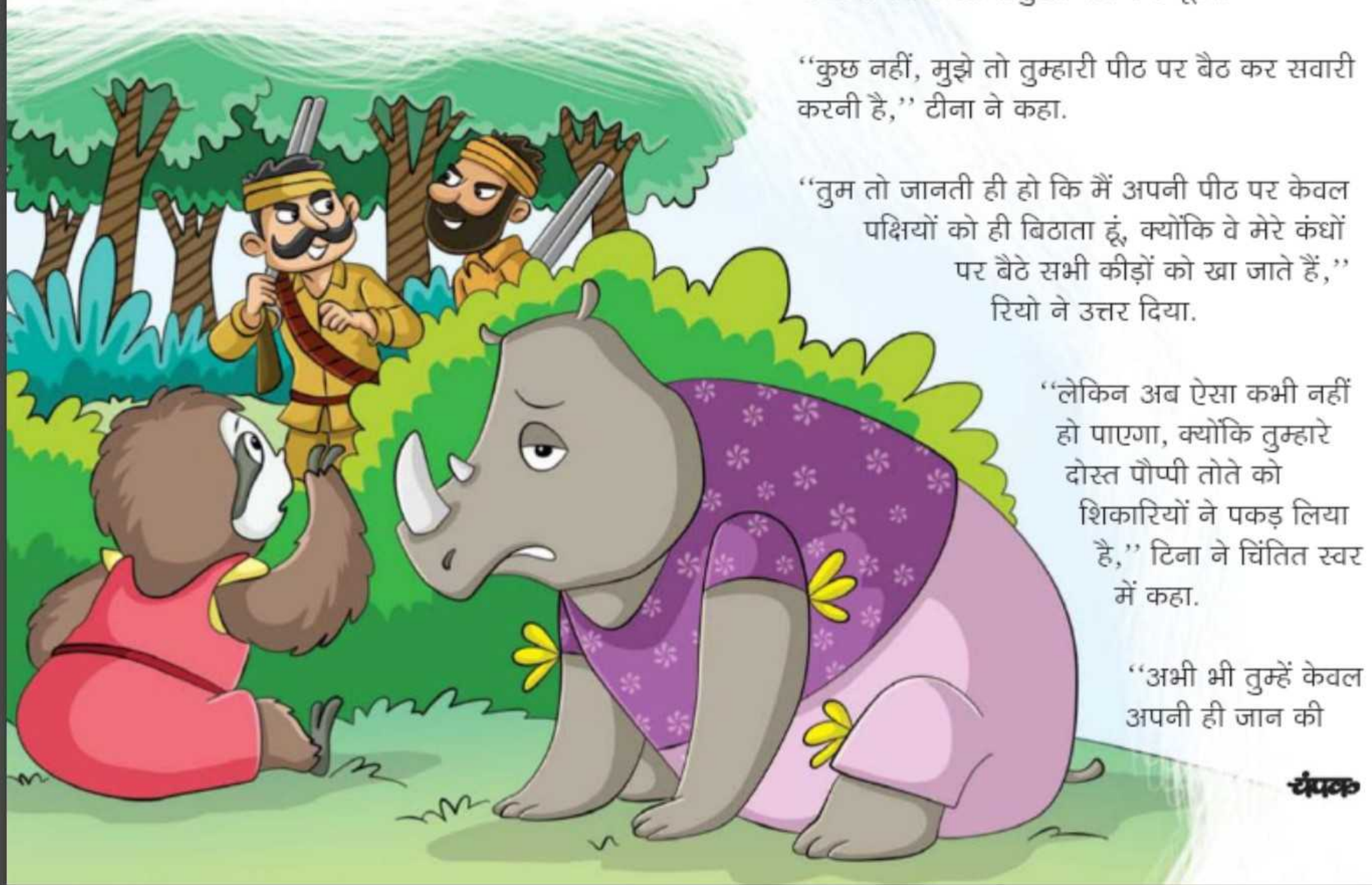

only books magazine

फिक्र हो रही है. अपने दोस्त पौप्पी की जान की नहीं,'' टीना ने रियो से कहा.

''मेरे भारीभरकम शरीर के कारण सभी जानवर मेरा मजाक उड़ाते हैं. मुझे किसी से कोई मतलब नहीं. अब जाओ और मुझे आराम करने दो.''

इतना कह कर रियो गुस्से में आसपास बिखरा हुआ कीचड़ अपने शरीर पर डालने लगा.

टीना समझ नहीं पा रही थी कि वह ऐसा क्या करे जिस से जंगल में आए शिकारी भाग जाएं.

''मैं जानती हूं कि तुम दिल के बहुत अच्छे हो. कम से कम एक बार मुझे अपनी पीठ पर बिठा दो,'' टीना ने अभी तक हार नहीं मानी थी.

''चल बैठ जा. कीचड़ की वजह से फिसल कर नीचे गिर पड़ो तो मुझे मत कहना,'' रियो मान गया.

टीना उस की पीठ पर सवार हो गई, ''चलो, अब भागो.''

यह सुनते ही रियो तेजी से दौड़ने लगा, ''और तेज, जरा और तेज,'' टीना ने रियो को तेज भागने के लिए उत्साहित किया.

नजर कमजोर होने के कारण रियो को बीच रास्ते में खड़ा शिकारियों का ट्रक नहीं दिखाई दिया और वह भागता हुआ उस से जा टकराया.

भारीभरकम रियो की टक्कर से शिकारियों का ट्रक किसी खिलौने की तरह हवा में उछल गया और उस में सवार शिकारी पानी के तालाब में जा गिरे. उन का ट्रक चकनाचूर हो गया.

''बाप रे, इतना बड़ा गैंडा. चलो, भागो यहां से वरना यह हमें कुचल डालेगा.'' दोनों घायल शिकारी गिरतेपड़ते किसी तरह सिर पर पांव रख कर वहां से भाग खड़े हुए.

टीना की योजना कामयाब हो गई. उस ने रियो को मदद के लिए धन्यवाद दिया.

टाइगर

''केवल धन्यवाद देने से काम नहीं चलेगा, तुम्हें मेरा भी एक काम करना होगा,'' रियो ने कहा.

अन्य सभी जानवर भी वहां इकट्ठा हो गए थे और सभी ने रियो की प्रशंसा की.

''हां हां कहो, तुम क्या चाहते हो? हम अभी तुम्हारे लिए खाने का इंतजाम करते हैं,'' सभी जानवरों ने खुश हो कर एक स्वर में कहा, क्योंकि रियो ने उन की जान बचाई थी.

''अगर तुम मेरी इच्छा पूरी करना चाहते हो तो सुनो, मैं भी अन्य पक्षियों की तरह हवा में उड़ना चाहता हूं,'' रियो की इच्छा जान कर जानवरों के होश उड़ गए. वे एकदूसरे का मुंह ताकने लगे.

''यह तुम कैसी बहकीबहकी बातें कर रहे हो? इतना बड़ा शरीर ले कर तुम हवा में कैसे उड़ोगे भाई?'' टीना ने आश्चर्य से पूछा.

''मैं कुछ भी नहीं जानता. अगर तुम ने मेरी यह इच्छा पूरी नहीं की तो मैं तुम सभी को उसी तरह तालाब में फेंक दूंगा जिस तरह शिकारी गिरे थे,'' रियो उड़ने की जिद पर अड़ गया.

''हमें कुछ नहीं पता, तुम बुद्धिमान हो अब कोई रास्ता निकालो,'' सारे जानवरों की नजर टीना पर ही थी.

''अब केवल तुम ही हमें रियो के गुस्से से बचा सकती हो.''

टीना ने रियो को समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं माना.

''जल्दी कुछ करो वरना मैं अभी इस पेड़ को टक्कर मार कर नीचे गिराता हूं,'' रियो गुस्से में भर कर बोला तो टीना ने उसे किसी तरह शांत किया.

''ठीक है, हम तुम्हारे हवा में उड़ने का इंतजाम जरूर करेंगे पर हमें थोड़ा वक्त तो दो.''

''कल तक अगर तुम ने मेरा काम नहीं किया तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा,'' रियो बोला.

उस की इच्छा एक दुखद स्वप्न की तरह थी और किसी को भी इस बात का उपाय नहीं सूझ रहा था कि इतने भारीभरकम गैंडे को हवा में कैसे उड़ाया जाए.

तभी टीना को दूर से एक क्रेन आती दिखाई दी जो शायद शिकारियों की टूटी पड़ी गाड़ी को उठाने के लिए आ रही थी.

उस क्रेन को देख कर टीना के दिमाग में एक आइडिया आया. उस ने रियो से कहा कि वह जंगल में दाखिल होने वाली जगह पर जा कर चुपचाप लेट जाए. रियो ने वैसा ही किया जैसा टीना ने कहा था.

''अरे, जंगल के भीतर जाने का रास्ता तो इस गैंडे ने रोक रखा है. अब क्या करें?'' बीच रास्ते में रियो को पसरा हुआ देख कर क्रेन ड्राइवर चिल्लाया.

''सब से पहले इसी को उठा कर कहीं दूर छोड़ कर

आना पड़ेगा वरना यह हमें गाड़ी नहीं ले जाने देगा.'' क्रेन पर सवार दूसरे आदमी ने उत्तर दिया.

दोनों ने मिल कर क्रेन की जंजीर से रियो को अच्छे से जकड़ दिया. इस के बाद उन्होंने उसे वहां से हटाने के लिए उसे हवा में उठा लिया.

जंजीरों में जकड़े हुए रियो ने खुद को हवा में झूलते हुए पाया तो उस की खुशी का ठिकाना नहीं रहा.

आसमान में उड़ने की उस की इच्छा पूरी हो रही थी.

क्रेन वाले ने कुछ देर बाद उसे जंगल से दूर छोड़ दिया और फिर अपनी टूटी गाड़ी को उठा कर वहां से चले गए.

''धन्यवाद भाइयो, आज मुझे पता चला कि तुम मुझ से कितना प्यार करते हो. तुम ने मेरी इच्छा पूरी कर दी जो लगभग असंभव थी. आज से तुम्हारा यह दोस्त जंगल के सभी जानवरों के लिए हमेशा तैयार मिलेगा,'' रियो ने खुश होते हुए कहा तो सारे जानवरों ने राहत की सांस ली.

उन्होंने मिल कर टीना की बुद्धिमानी और सूझबूझ के लिए उस की खूब प्रशंसा की जिस की वजह से उन्हें रियो जैसा दोस्त मिल गया था.

''किसी की शारीरिक अवस्था के कारण उस का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए. रियो की नाराजगी इसी वजह से थी कि हम सभी जानवर उस का बेडौल और मोटे होने का मजाक उड़ाते थे,'' टीना ने लगे हाथ सभी को नसीहत भी दे डाली.

वे सभी टीना की बातों से सहमत थे और सभी ने वादा किया कि वे अब रियो से एक दोस्त जैसा बरताव करेंगे. ●

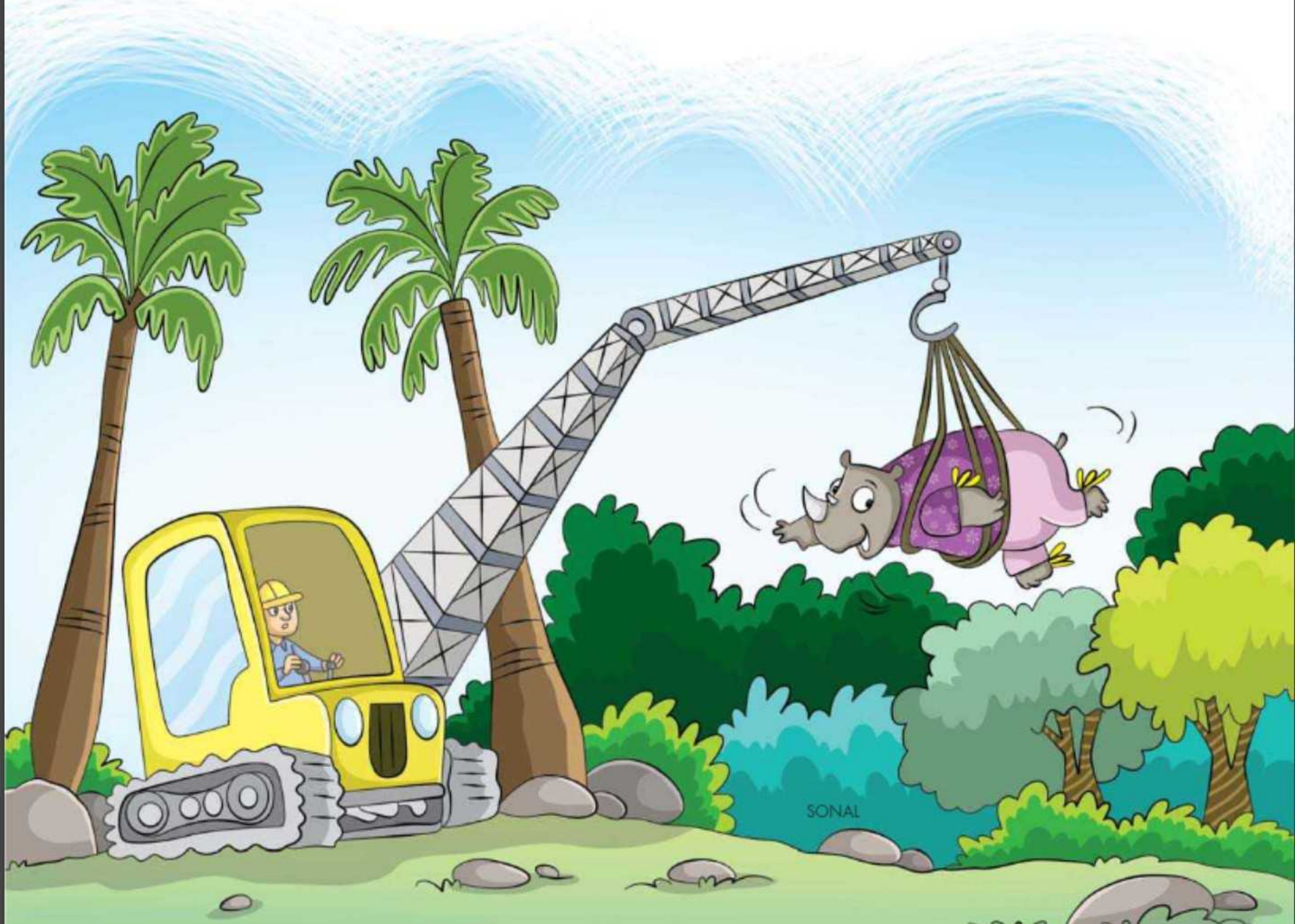

सुंदर रंग भरो

टाइगर

रास्ता बताओ

डोगो ड्रैगनफ्लाइ रास्ता भटक गई है. घास तक पहुंचने में उस की सहायता करें.

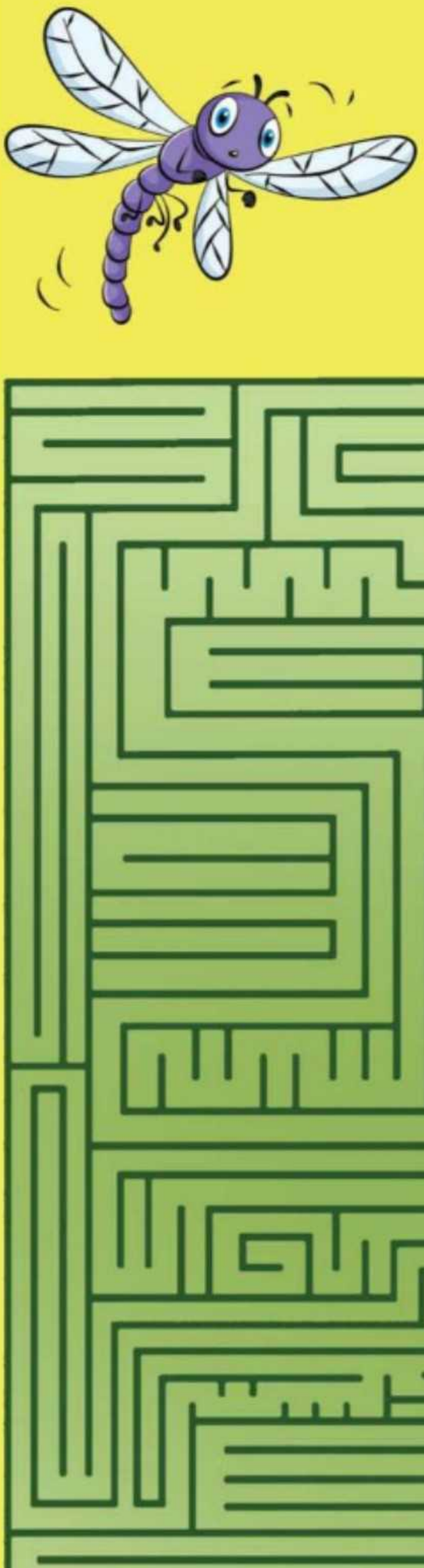

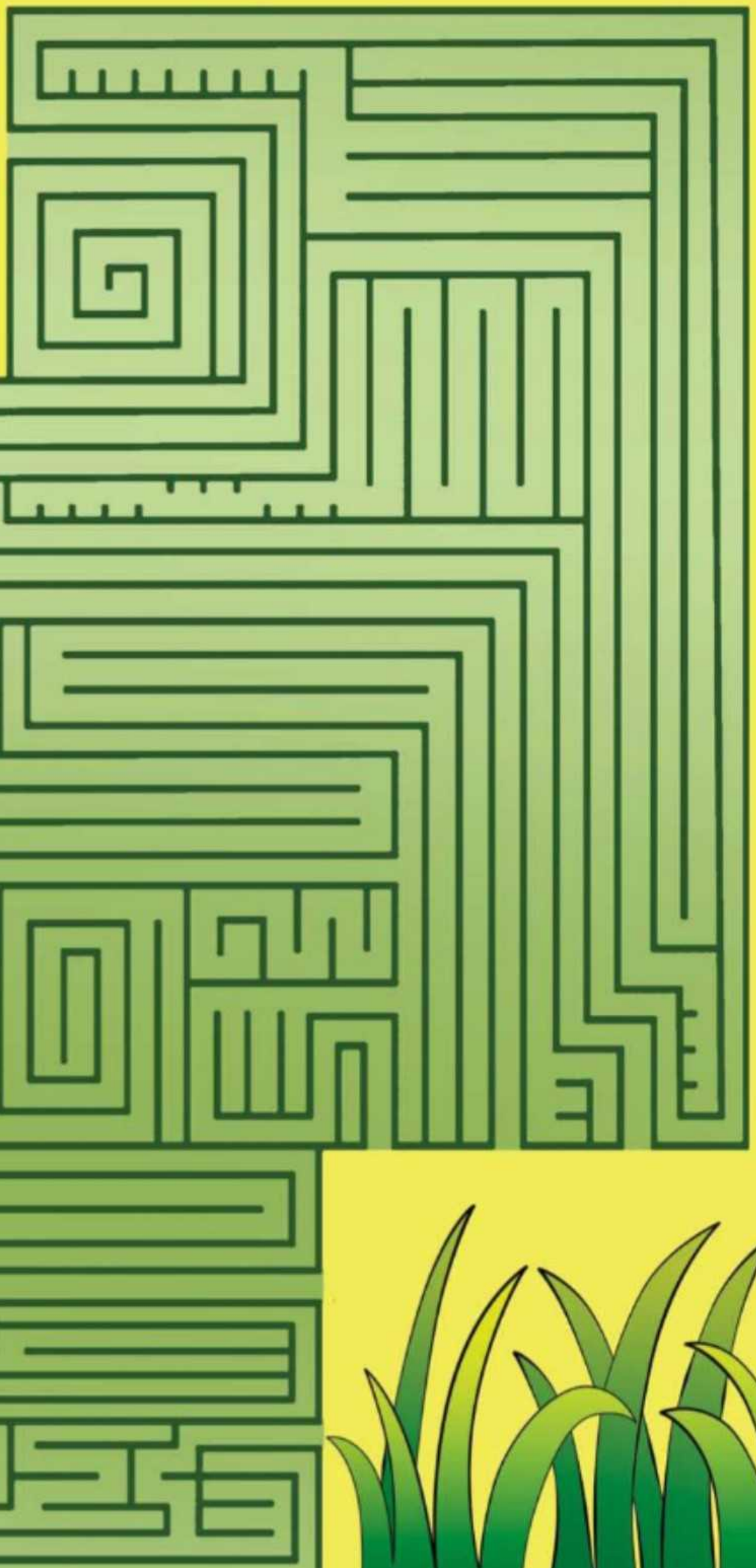

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बिजली घर

कहानी ● दलीप भाटिया

प्रिय छात्रो, नमस्कार.

मैं परमाणु बिजली घर हूं. मेरे यहां जो होता है वह आज मैं तुम्हारे साथ साझा करूंगा. मेरा यह संस्मरण तुम्हारे जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करेगा और मार्गदर्शन भी करेगा.

मेरे जैसे बिजली घर में किए जाने वाले प्रत्येक टेस्ट यानी शोध का समय निर्धारित है. निर्धारित टाइम टेबल के अनुसार ही मेरे सारे उपकरणों का टेस्ट मैंटेनैंस निरीक्षणपरीक्षण किया जाता है.

जैसे 2 वर्ष में एक बार 30 से 45 दिन का शटडाउन कर मेरा पूरा मैंटेनैंस किया जाता है ताकि मैं बाद में लगातार बिजली उत्पादन कर सकूं. तुम भी अपने सभी विषयों का टाइमटेबल बना कर अमल करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी.

मुझ बिजली घर में जो भी कार्य होते हैं, उन का रिकौर्ड रखा जाता है. रिकौर्ड एक प्रूफ है कि यह कार्य किया गया है.

तुम भी जो कुछ पढ़ते हो उस का रिकौर्ड रखने की आदत बनाओ. डायरी या नोट बुक में पैन से लिख लो कि और क्या पढ़ा. लिखे हुए नोट्स परीक्षा पूर्व रिवीजन के लिए उपयोगी होंगे.

मुझ परमाणु बिजली घर में एक एरिया ऐसा होता है जो रेडिएशन विकिरण वातावरण में होता है, क्योंकि इस एरिया मैं रेडिएशन के कार्य होते हैं.

मेरे कर्मचारी रेडिएशन विकिरण वातावरण वाले क्षेत्र में काम करने से पहले वर्कशौप में पूरी रिहर्सल करते हैं और विकिरण वातावरण में पूरी तैयारी एवं सुरक्षा कवच प्लास्टिक सूट रेस्पिरेटर इत्यादि के साथ स्वास्थ्य भौतिकी विभाग के निर्देशों का पालन करते हुए अनुमत समय के लिए जाते हैं ताकि काम

भी सही हो और विकिरण डोज भी कम से कम लगे.

तुम भी परीक्षा से पूर्व मौडल पेपर हल कर रिहर्सल कर सकते हो और परीक्षा हौल में पूरी सावधानी के साथ बिना मोबाइल के और अन्य नियमों का पालन कर निर्धारित समय में पूरा पेपर चेक भी कर सकते हो.

सही नियमों का अनुपालन करते हुए तुम भी अपने पेपर को चैक कर सकते हो अगर तुम ने एक निर्धारित दिए समय में अपना पेपर कंप्लीट कर लिया है.

मुझ बिजली घर में परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद की टैक्निकल स्पेसिफिकेशन का पालन करना अनिवार्य है. मुझ बिजली घर में उत्पादन प्रक्रिया के लिए निर्धारित मापदंडों का सतर्कता से पालन करना अनिवार्य है.

तुम भी अपने विषय की कक्षा 6 से 12 तक की एन सी ई आर टी अथवा स्टेट बोर्ड की पुस्तकें पढ़ लोगे तो परीक्षा में सफलता अवश्य मिलेगी.

अपने स्कूल द्वारा दिए गए नोट्स, गाइडबुक्स और साथ ही पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना सुनिश्चित कर लो ताकि तुम्हारी नीव मजबूत हो सके.

मुझ बिजली घर में अगर कोई समस्या आती है तो उस पर मंथन कर मूल कारण का पता लगाया जाता है फिर उसे ठीक किया जाता है. परीक्षा में तुम्हें सफलता नहीं मिल सके तो एक सीख मिलेगी.

इस असफलता पर स्वयं चिंतनमनन करो और अपनी गलती सुधारो ताकि अगली परीक्षा में सफलता प्राप्त हो सके.

संक्षेप में मैं ने तुम्हें अपने अनुभवों से कुछ सुझाव दिए हैं. पालन करने का प्रयास करें. सफलता अवश्य मिलेगी. ●

शुभकामना सहित परमाणु बिजली घर. तुम सभी को बिजली देने वाला.

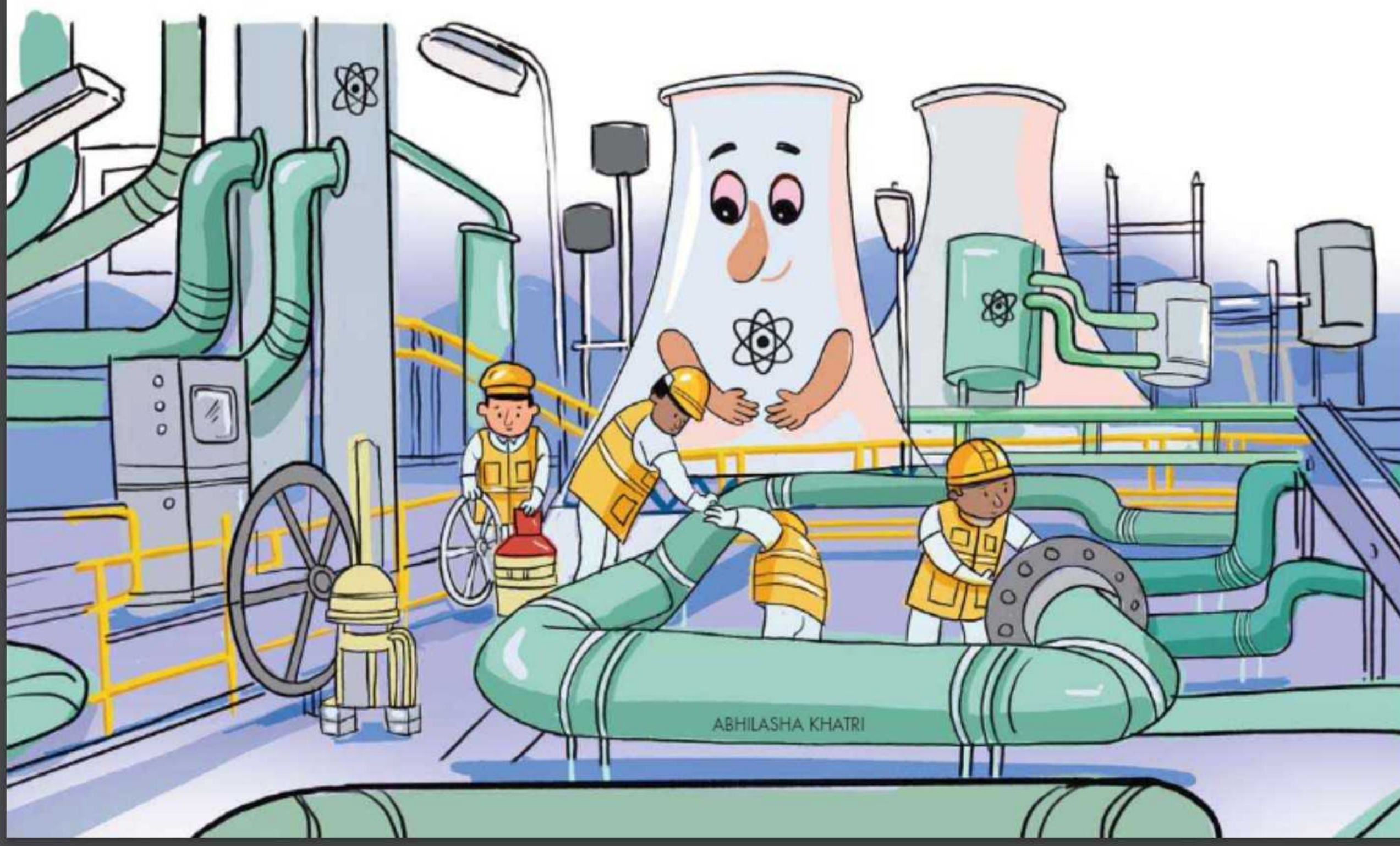

देखो हंस न देना

समीर (किशोर से) : हिरण के कौन से प्रकार रेन यानी बारिश में रुके रहते हैं?
किशोर : रेनडियर.

सिद्धांत सौरभ कौशल, 8 वर्ष
पुणे

केशव (विमल से) : एक आदमी कार चला रहा है और तीन गेट यानी द्वार पर आते हैं. एक गेट के पीछे जूस है, दूसरे गेट के पास स्नैक्स हैं और तीसरे के पास फल हैं. आदमी सब से पहले क्या करेगा?
विमल : कार का दरवाजा खोलेगा.

हिनैंग जैन, 9 वर्ष
नई दिल्ली

हर्ष (विवेक से) : लड़के ने क्या कहा जब उस ने अपने कुत्ते को हौट सन यानी तेज धूप में लेटे हुए देखा?
विवक : हौट डौग.

श्रेया रोहित धर्माधिकारी, 6 वर्ष
थाणे

पीटर (टैड से) : एक टीचर और ट्रेन के बीच क्या फर्क है?
टैड : क्या? तुम्हीं बताओ.
पीटर : टीचर कहती है, "उस गम को थूक दो," और ट्रेन कहती है, "च्यूव, च्यूव."

शैलेब मैस्सी, 14 वर्ष
अंबाला

रोहन (सोहन से) : बिल्ली का पसंदीदा कलर क्या हो सकता है?
सोहन : पर्र पल.

अमरिक मुखर्जी, 9 वर्ष
हावड़ा

पहला आदमी (दूसरे आदमी से) : मेरे कुत्ते के पास नाक नहीं है.
दूसरा आदमी : तो वह सूंघता कैसे है?
पहला आदमी : औफुल यानी बहुत बुरा.

करण खुराना, 12 वर्ष
नई दिल्ली

विजय (अजय से) : स्केयरक्रो यानी बिजूका ने नोबेल पुरस्कार क्यों जीता?
अजय : क्योंकि वह अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट था.

आदित्य पंत, 12 वर्ष
देहरादून

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

टीचर (मोहन से) : तुम क्लास में क्यों खेल रहे हो?
मोहन : क्योंकि बाहर बारिश हो रही है.

अर्चित विक्रम, 10 वर्ष, पटना

टीचर (छात्र से) : एक से 10 तक की गिनती सुनाओ.
छात्र : 1, 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 10.
टीचर : 6 कहां गया? तुम्हें गिनती भी नहीं आती है?
छात्र : सर, आज मैं ने समाचार में सुना था कि रोड ऐक्सीडैंट में 6 मर गए.

धैर्य मेहंदीरत्ता, 8 वर्ष
गुरुग्राम

सैम रोता हुआ घर आया.
मम्मी : तुम रो क्यों रहे हो?
सैम : टीचर ने मुझे डांटा.
मम्मी : क्यों?
सैम : क्योंकि मैं ने उन्हें चिकन कह दिया था.
मम्मी : तुम ने ऐसा क्यों कहा?
सैम : क्योंकि वह मुझे ऐग्जाम में हमेशा बड़ाबड़ा अंडा (जीरो) दे देती है.

संभव दास, 10 वर्ष
ओडिशा

रोहित (केशव से) : मैथ बुक परेशान क्यों थी?
केशव : क्योंकि उस में बहुत सारी समस्याएं थीं.

श्रेयांशी रौय, 11 वर्ष
कोलकाता

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 8657402248**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और ऐनर्जी ड्रिंक

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू ने बिजनैसमैन जैकी सियार के यहां काम करना शुरू किया.

डमरू, मेरे लिए ऐनर्जी ड्रिंक ले आओ.

मालिक, यह ऐनर्जी ड्रिंक क्या होता है?

जब हम कार में ऐनर्जी डालते हैं सिर्फ तभी कार दौड़ती है.

समझ गया, इसीलिए आप को भी आगे बढ़ने के लिए ऐनर्जी की जरूरत हो रही है.

बहुत अच्छा, अब ऐसा है, कल मुझे बाहर जाना है, इसलिए कार को धोना और हरेक चीज चैक करना न भूलना.

हां, मालिक, आप बेफिक्र रहें.

अगले दिन

कार के डीजल टैंक में तुम एनर्जी ड्रिंक क्यों डाल रहे हो?

मालिक, आप ने कहा था कि यह कार एनर्जी मिलने पर दौड़ती है.

अरे बेवकूफ, इसे डीजल से ऐनर्जी मिलती है.

यह बात तो आप को पहले बतानी चाहिए थी.

तुम सब से बड़े मूर्ख हो, भाग जाओ, मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं है.

क्या, तुम ने मेरी महंगी कार बरबाद कर दी.

जरूर, मैं चला जाऊंगा. मैं सिर्फ आप को इतना बता रहा हूं कि ऐनर्जी ड्रिंक से टैंक पूरापूरा भर चुका है.

मैं ने भी काफी ऐनर्जी ड्रिंक पी ली है. अब मुझे भी भागने के लिए काफी ऐनर्जी मिल गई है.

SONAL

ऐन्नी का सपना

कहानी • कुमुद कुमार

आनंदवन में सर्दियों का मौसम शुरू हो चुका था.

आनंदवनवासियों ने सर्दियों की कड़ाके की ठंडी हवा से बचने के लिए अपने घरों के दरवाजे और खिड़कियां अच्छी तरह मरम्मत करवा ली थी.

ऐन्नी हिरण बहुत सतर्क थी. उसे तो ठंड बहुत सताती थी. ठंड के नाम से ही उस की कंपकपी छूटती थी. इसलिए वह सर्दियों में अलाव जलाने के लिए बहुत सारी सूखी लकड़ियां गर्मियों में ही इकट्ठी कर लेती थी.

इस बार तो उस ने कुछ ज्यादा ही लकड़ियां इकट्ठी कर ली थीं. अपने घर की एक कोठरी उस ने सूखी लकड़ियों से भर ली थी.

जैसे ही सर्दियों का मौसम शुरू हुआ, वह सुबह उठते ही चबूतरे पर अलाव जला कर एक कुरसी पर बैठ जाती. फिर अपने घनिष्ठ दोस्त बेन्नी के आने पर उस के साथ गर्म चाय की चुस्कियां लेती.

दोनों मजे से अलाव तापते और घंटों पूरी दुनिया की बातें करते.

लेकिन ऐन्नी अपने कामचोर और आलसी पड़ोसियों से दुखी थी. उन्हें पता था कि ऐन्नी के पास बहुत सारी सूखी लकड़ियां हैं, बस जब देखो वे उस से सूखी लकड़ियां उधार मांगने आ जाते. इस से वह बड़ी तंग आ गई थी.

एक दिन बेन्नी से ऐन्नी ने अपने मन की बात कही, ''बेन्नी, मैं तो अपने आलसी पड़ोसियों से तंग आ गई हूं. गर्मियों में तो मेरे ये आलसी पड़ोसी घर में पड़े सुस्ताते रहे. सर्दियों की इन्होंने कोई चिंता नहीं की. अब अलाव जलाने के लिए हर दिन सूखी लकड़ियां उधार मांगने मेरे पास चले आते हैं. बताओ, बेन्नी मैं क्या करूं?''

''अरे ऐन्नी, ऐसे तो तुम्हारी सूखी लकड़ियों का भंडार जल्दी ही ख़त्म हो जाएगा. फिर तुम क्या करोगी? तुम्हें तो जाड़ा भी बहुत सताता है.''

''बेन्नी, तभी तो तुम से सलाह ले रही हूं कि क्या करूं? कोई अच्छी सी सलाह दो, इन आलसी पड़ोसियों से बचने की. पड़ोसी हैं तो इन्हें सीधे मुंह मना भी नहीं कर सकती.''

अपने दोस्त की बात सुन कर बेन्नी कुछ सोचने लगा. फिर बोला, ''ऐन्नी, तुम एक काम करो. तुम अपने इन पड़ोसियों से कहना कि अब तुम ने लकड़ियां बेचने का धंधा शुरू कर दिया है. अगर किसी को लकड़ी लेनी हैं तो उस का दाम चुकाना होगा.''

"अरे, वाह बेन्नी, तुम ने तो मुझे बहुत अच्छी तरकीब बता दी. मैं ऐसा ही करती हूं. ऐसा करने पर पड़ोसी या तो लकड़ियां मांगनी बंद कर देंगे या फिर उस की कीमत चुकाएंगे. इस से मेरी कुछ आमदनी भी हो जाएगी. ये तो मुनाफे का सौदा है."

अगले दिन ऐन्नी ने अपने चबूतरे पर एक बोर्ड टांग दिया. बोर्ड पर लिखा था, "यहां सूखी लकड़ियां बेची जाती हैं. छोटा गट्ठर 25 रुपए और बड़ा गट्ठर 50 रुपए."

ऐन्नी ने लकड़ियों के कुछ छोटे और कुछ बड़े गट्ठर बना लिए. फिर वह चबूतरे पर उन के बेचने के लिए एक तख्त डाल कर बैठ गई. बोर्ड पर लिखी बातों से यह स्पष्ट हो गया था कि ऐन्नी अब लकड़ियां न तो मुफ्त में बांटेगी और न ही उधार देगी. जिसे लकड़ियां लेनी हैं, उसे अब कीमत चुकानी होगी.

इस से मुफ्तखोर अब ऐन्नी से किनारा काटने लगे. केवल जरूरतमंद ही उस के चबूतरे पर आते और कीमत चुका कर लकड़ियां खरीद कर ले जाते.

ऐन्नी के पास सर्दियों में कोई विशेष काम भी नहीं था. वह तख्त पर बैठी रहती और अपनी लकड़ियों के गट्ठर बेचती रहती. आमदनी होने से ऐन्नी की इस काम में रुचि बढ़ गई. मुनाफा होते देख उस का लालच भी बढ़ने लगा. वह लकड़ियों को चीरने की आरा मशीन लगाने के सपने देखने लगी.

अब ऐन्नी सुबह से शाम तक अपने चबूतरे पर बैठी लकड़ियां बेचती रहती. लालच के कारण उस ने अपना अलाव तक जलाना छोड़ दिया था. वह कंबल लपेटे गुनगुनी धूप में तख्त पर बैठी रहती और आरा मशीन लगाने का सपना देखती रहती.

उस के मुनाफे को देख कर उस के दूर के पड़ोसी अजीब सींग वाली फन्नी भेड़ और लाइका बायसन उस से ईर्ष्या करने लगे. वे खुद तो कुछ करते नहीं थे, लेकिन दूसरों का फायदा होते देख उन से खूब जलते थे. उन्हें चोरी कर ने की भी बुरी आदत थी. इस कारण वे दोनों कई बार जेल भी जा चुके थे, लेकिन उन की चोरी करने की आदत गई नहीं थी.

एक दिन ऐन्नी अपने तख्त पर बैठी लकड़ियां बेचने का हिसाबकिताब जोड़ रही थी. मुनाफे को देख कर ऐन्नी की आंखों में चमक आ रही थी. वह मन ही मन मुसकरा रहा था कि अगर उसे ऐसे ही मुनाफा होता रहा तो उस की आरा मशीन लगाने का सपना जल्दी ही पूरा हो जाएगा.

ऐन्नी दीवार से टेक लगा कर गुनगुनी धूप सेंकने लगी. धूप सेंकतेसेंकते वह फिर से धनवान बनने और आरा मशीन लगाने का सपना देखने लगी. फिर अपनी शानदार जिंदगी के बारे में सोचने लगी, 'उस के पास आलीशान मकान होगा, नौकरचाकर होंगे, वह मौज ही मौज करेगी. 'वाह वाह.'

ऐसा सोचतेसोचते उस की कब आंख लग गई, उसे पता ही नहीं चला. वह दिन में ही खर्राटे भरने लगी.

फन्नी और लाइका तो ऐसे ही मौके की तलाश में थीं.

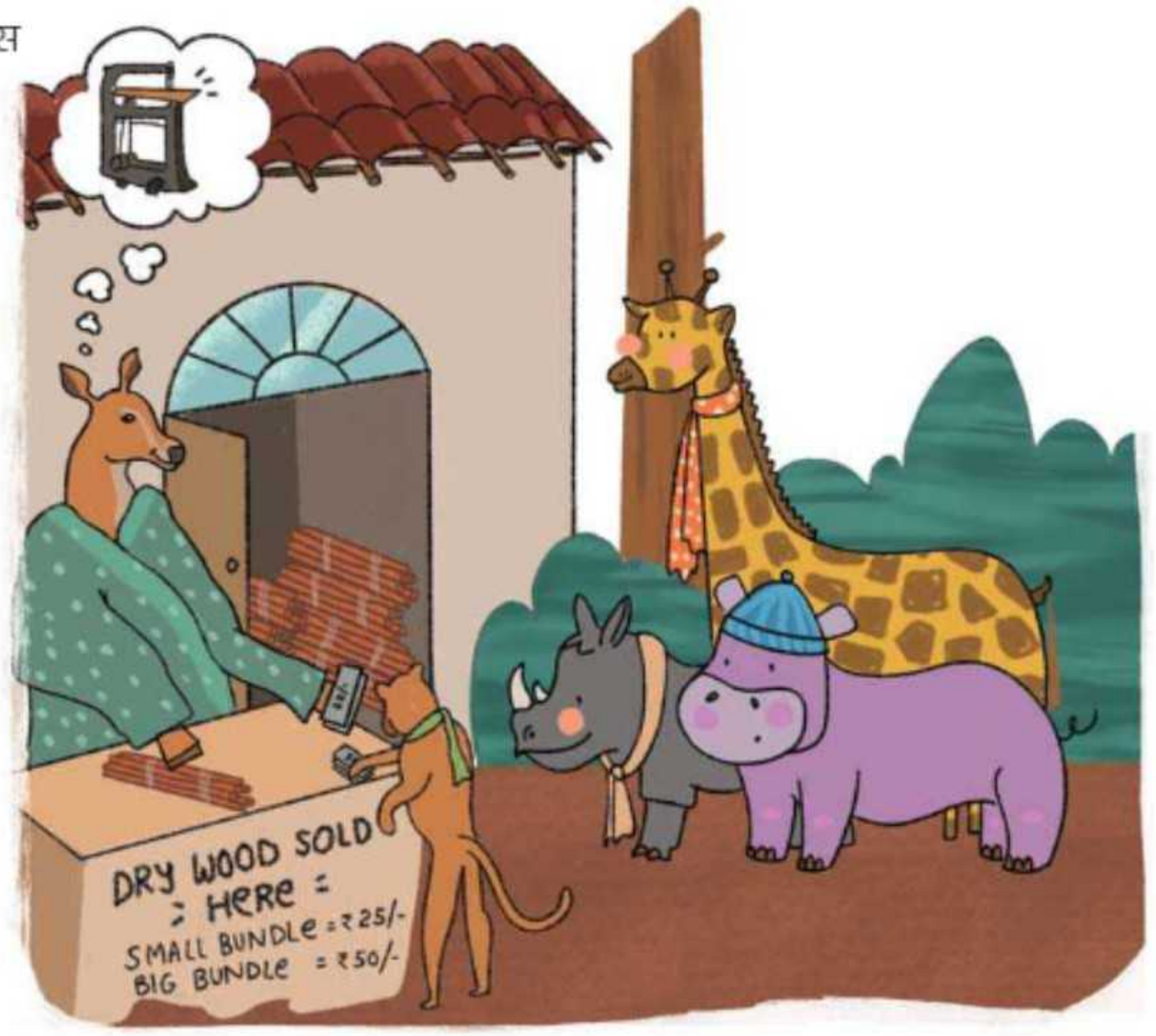

नवंबर (द्वितीय) 2021

उन्होंने देखा कि ऐन्नी खूब खर्राटे भर रही है तो वे एकएक कर चुपके से उस के लकड़ी के गट्ठर चुरा कर ले जाने लगे. जब चबूतरे के गट्ठर खत्म हो गए तो वे कोठरी में रखे गट्ठर उठा कर ले जाने लगे. तभी उन्हें रास्ते में बेन्नी टकरा गई. उस के पूछ ने पर उन्होंने सफाई देते हुए कहा, ''ये गट्ठर हम ऐन्नी से खरीद कर ला रहे हैं.''

लेकिन बेन्नी उन की मक्कारियों को अच्छी तरह जानती थी. इसलिए उसे उन की बात पर विश्वास नहीं हुआ. उस ने अपने मोबाइल से लकड़ी के गट्ठर ले जाते हुए फन्नी और लाइका की कुछ फोटो खींच लीं. इस बात का फन्नी और लाइका को पता भी नहीं चला. उन्होंने लकड़ी के गट्ठर जंगल में ले जा कर छिपा दिए.

बेन्नी ऐन्नी से मिल कर सच्चाई जानना चाहती थी. इसलिए वह ऐन्नी के पास पंहुची. उस ने देखा कि ऐन्नी तो दिन में ही खर्राटे भर रही है. अब उस का माथा ठन का. उसे यकीन हो गया कि फन्नी और लाइका दोनों उस से झूठ बोल रहे थे. उसे चबूतरे पर लकड़ी का एक भी गट्ठर नजर नहीं आया. अब तो उस का शक और गहरा गया.

बेन्नी ने खर्राटे भरते हुए ऐन्नी को जगाने का प्रयास किया तो वह नींद में ही बड़बड़ाई,'' अरे, आरा मशीन को चलने दो. अभी लकड़ी के सौदागर से 2 लाख का सौदा हुआ है. वह रुपए ले कर आता ही होगा.''

बेन्नी ने उसे झकझोर कर उठाते हुए कहा, ''अरे, ओए ऐन्नी, जरा उठो तो सही. सौदागर से 2 लाख का हिसाब बाद में करना और आरा मशीन भी चलाते रहना, लेकिन पहले अपने लकड़ी के गट्ठर तो बचा लो. देखो तो सही, तुम्हारी लकड़ियां कहां गायब हो गईं?''

ऐन्नी हड़बड़ा कर उठी. उस ने देखा कि चबूतरे पर रखी सूखी लकड़ी के सारे गट्ठर गायब हैं. वह कंबल एक तरफ फेंकते हुए लकड़ी वाली कोठरी की ओर गई, तो उस ने देखा कोठरी भी लकड़ियों से खाली थी.

अब ऐन्नी चिल्लाने लगी, ''बेन्नी, हाय, मैं लुट गई. कोई मेरी लकड़ियों के सारे गट्ठर चुरा कर भाग गया. हाय, मेरी आरा मशीन. अब मेरा क्या होगा?''

बेन्नी को समझते देर न लगी कि ऐन्नी सपने में आरा मशीन लगाने का ख्वाब देख रही थी. उसे ऐन्नी पर हंसी भी आ रही थी और तरस भी. तब उस ने कहा, ''ऐन्नी, दिन में सपने देखना छोड़ दो. केवल सपने देखने से सपने पूरे नहीं होते, उन्हें पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करने के साथ चौकन्ना भी रहना पड़ता है. दिन में खर्राटे भरोगी तो लकड़ियों सहित आरा मशीन भी चोरी हो जाएगी. चलो, मेरे साथ, अब तुम्हें तुम्हारी आरा मशीन वापस दिलाती हूं, वह भी लकड़ियों सहित.''

यह सुन कर ऐन्नी का दिमाग चकराया. वह सोचने लगी कि यह बेन्नी कहीं उस का मजाक तो नहीं उड़ा रही है. भला यह चोरी हुआ माल कैसे वापस दिला सकता है. हिचकिचाते हुए ऐन्नी ने पूछा, ''कहां चलना है, बेन्नी? हाय, मैं तो बरबाद हो गई. हाय, मेरी आरा मशीन, अब कैसे लगा पाऊंगी मैं आरा मशीन. मेरा तो सपना ही मिट्टी में मिल गया.''

ऐन्नी के विलाप को सुन कर बेन्नी मन ही मन मुसकरा रही थी क्योंकि वह जानती थी कि मुसीबत इतनी बड़ी थी नहीं जितना दुख ऐन्नी जता रही है. उस ने कहा, ''ऐन्नी, परेशान मत हो, चलो, मेरे साथ थाने चलो, चोरी की रिपोर्ट लिखवाने.''

ऐन्नी विलाप करती हुई दुखी मन से बेन्नी के साथ थाने पहुंची, उसे अपनी लकड़ियां वापस मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी.

थाने पहुंच कर उन्होंने थानेदार जीतू चीते को चोरी की रिपोर्ट सौंप दी. बेन्नी ने कहा, ''थानेदार साहब, चोरी किस ने की है उस का सुबूत मेरे पास है,''

''दिखाओ, क्या सुबूत है तुम्हारे पास? अगर तुम्हारे पास सुबूत है तो चोर को पकड़ने में देर नहीं लगेगी.''

नवंबर (द्वितीय) 2021

फिर तो मीकू ने झट से अपना मोबाइल जीतू के सामने रख दिया. ऐन्नी भी सुबूत को उचक कर देखने लगी. बेन्नी द्वारा खींचे गए फोटो में फन्नी भेड़िया और लाइका बायसन लकड़ी चोरी करते हुए स्पष्ट नजर आ रहे थे.

ऐन्नी जोश में बोली, ''थानेदार साहब, पकड़ लो इन दोनों दुष्टों को, जिन्होंने मेरी लकड़ियां ही नहीं चुराई बल्कि मेरा सपना भी चुरा लिया.''

थानेदार जीतू ने अपनी पुलिस फोर्स के साथ कुछ ही समय में फन्नी और लाइका दोनों को पकड़ लिया और चोरी की लकड़ियां भी बरामद कर लीं. पहले तो फन्नी और लाइका अपनी गलती मानने को तैयार नहीं थे. लेकिन जब उन्हें चोरी के लकड़ी गट्ठर ले जाने के सुबूत पेश किए गए तो दोनों को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ी. दोनों को जीतू थानेदार ने जेल की हवा खिला दी.

ऐन्नी अपनी लकड़ियां वापस पा कर बहुत खुश थी. उस ने बेन्नी की होशियारी पर उस की खूब तारीफ की और शाम को उसे लजीज व्यंजनों की दावत दी.

आगे से ऐन्नी कभी काम के वक्त दिन में नहीं सोई. उसे आरा मशीन लगाने का अपना सपना जो पूरा करना था. ●

बताओ तो जानें

1. मैं बहुत साफ हूं
   किसी की भी प्यास बुझाता
   हर जगह मैं पाया जाता
   मैं जीवन का आधार हूं.

2. मैं अराजकता हूं
   कहीं भी प्रवेश कर जाता हूं
   शांति मुझ से भागे दूर
   असंतुष्टों का चहेता हूं.

3. अगर मेरी त्वचा हटाओगे
   मैं कभी नहीं रोऊंगा
   लेकिन तुम रोने लगोगे
   खाना स्वादिष्ठ बनाता हूं.

4. सुरंगों से भी जाता हूं
   पहाड़ियों पर भी जाता हूं
   अपने ऊपर से भी जाता हूं
   लेकिन मैं आगे नहीं बढ़ता.

देखें तुम कितना जानते हो

1. इन में से कौन सा पूर्वी अफ्रीका का एक देश है?
   (क) इरिट्रिया
   (ख) तुर्की
   (ग) फ्रांस
   (घ) पुर्तगाल

2. दिल्ली में एशियन गेम्स का आयोजन पहली बार कब किया गया था?
   (क) 1982
   (ख) 1963
   (ग) 1971
   (घ) 1951

3. जाड़े के दौरान जब जानवर सोते हैं तो उस अवस्था को क्या कहा जाता है?
   (क) प्रवास
   (ख) बिकिरण
   (ग) शीतनिद्रा
   (घ) चिंतन

4. प्रथम ओलिंपिक शीतकालीन खेल किस देश में आयोजित किया गया था?
   (क) कनाडा
   (ख) फ्रांस
   (ग) पुर्तगाल
   (घ) सिंगापुर

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1-पानी, 2-मुसीबत, 3-प्याज, 4-सड़क
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1-क, 2-ख, 3-ग, 4-ख.

मजेदार विज्ञान

पानी की जादुई तरीके से आवाजाही

आइए, पानी के गुणों की पड़ताल करें.

आप को चाहिए :

- पानी
- फूड कलर
- एक प्लेट
- पानी पीने का एक पारदर्शी गिलास
- एक मोमबत्ती.

ऐसा करें :

1. प्लेट के बीच में मोमबत्ती को रखें. प्लेट में थोड़ा सा पानी डालें और इस में एक बूंद फूड कलर की डालें.

2. किसी वयस्क से कहें कि वह मोमबत्ती को जला दे.

3. गिलास को उल्टा कर के पकड़ें और धीरेधीरे मोमबत्ती को ढक दें.

सोचें :

गिलास के अंदर पानी कैसे चला जाता है?

हमारे आसपास की हरेक चीज बहुत ही छोटेछोटे कणों से बनी हैं, जिन्हें अणु कहा जाता है. इन अणुओं के बीच में जगह होती है, जो तापमान जैसे फैक्टर यानी अवयव के अनुसार बढ़ती या घटती हैं यानी इन की जगह तापमान अनुसार बढ़नाघटना जारी रखती है.

मोमबत्ती की लौ अपने ऊपर की हवा के अणुओं को गरम करती है और हवा के अणुओं के बीच की जगह को बढ़ा देती है. जब हम गिलास द्वारा मोमबत्ती को ढक देते हैं, तो लौ बुझ जाती है क्योंकि सारी औक्सीजन का इस्तेमाल हो चुका होता है और बिना औक्सीजन के आग यानी लौ नहीं जल सकती है. गिलास के अंदर की हवा एक बार जब ठंडी हो जाती है तो हवा के अणुओं के बीच की जगह सिकुड़ने यानी कम होनी शुरू हो जाती है. इसी वजह से गिलास के अंदर कुछ रिक्त स्थान बन जाता है, लेकिन इसे भरने के लिए अंदर हवा जा नहीं पाती, क्योंकि रास्ता पानी रोके रहता है. इस से गिलास के अंदर एक वैक्यूम बन जाता है, जिस का मतलब है कि गिलास के अंदर हवा का दबाव कम हो गया और बाहर की ओर दबाव बढ़ गया. हवा का कम दबाव पानी को खाली जगह भरने के लिए अंदर की ओर खींचता है और बाहर का उच्च दबाव पानी को गिलास के अंदर धकेलता है. इस से ऐसा दिखाई देता है जैसे गिलास पानी में डूब गया हो.

देखें :

प्लेट के ऊपर रखी मोमबत्ती को जब गिलास ढक देता है तो इस की लौ बुझ जाती है और पानी गिलास के अंदर घुस जाता है.

पता करें :

समुद्री हवा और जमीन की हवा का निर्माण कैसे होता है?

समुद्री हवा वह है जो समुद्र के ऊपर से हो कर जमीन की ओर बहती है, जबकि जमीनी हवा वह है जो जमीन की ओर से समुद्र की ओर बहती है. दिन के समय जमीन सूरज के ताप से समुद्र की तुलना में तेजी से गरम हो जाती है और इसी वजह से जमीन के ऊपर की हवा समुद्र के ऊपर की हवा की तुलना में ज्यादा गरम हो जाती है. इस से हवा के अणुओं के बीच की जगह बढ़ जाती है और निम्न दबाव उत्पन्न हो जाता है. हमारे इस प्रयोग के अनुसार ही समुद्र के ऊपर की ठंडी हवा जिस का दबाव उच्च होता है, जमीन की ओर बहने लगती है, क्योंकि इधर हवा का दबाव कम है. इसे समुद्री हवा कहते हैं. ऐसा ही रात के समय में होता है जब जमीन की हवा ठंडी हो जाती है और समुद्र के ऊपर की हवा गरम ही बनी रहती है. जब हवा जमीन से समुद्र की ओर बहने लगती है तो इसे भूमि की हवा यानी लैंडब्रीज कहते हैं.

याददाश्त बढ़ाएं

21 नवंबर को विश्व टैलीविजन दिवस है. नीचे चित्र को देखें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें.

प्र.1. नीचे चित्र में आप कितने टैलीविजन सेट्स देखते हैं?
प्र.2. किस टैलीविजन सेट पर सब से अधिक बटन यानी स्वीच हैं?
प्र.3. कितने टैलीविजनों में ऐंटिना लगे हैं?

चीका का कैमरा

कहानी • इलिका प्रिय

चीका खरगोश के गले में कैमरा लटका देख, लिसा गिलहरी ने आश्चर्य से पूछा, ''अरे भाई, तुम राइटर हो न, फिर यह कैमरा कैसा?''

''मैं राइटर भी हूं और फोटोग्राफर भी, यह बहुत बढ़िया कैमरा है, यह बहुत दूर के फोटो भी साफसाफ खींच सकता है,'' चीका ने बताया.

''तो ठीक है चलो न, हम भी कुछ तस्वीरें एकसाथ खींचते हैं,'' लिसा ने चहकते हुए कहा.

''हां चलो,'' चीका ने कहा, फिर दोनों साथ चल पड़े, लिसा के कहने पर चीका ने पहाड़ों की कुछ खूबसूरत तस्वीरें खींची. उस के बाद वह भेड़ों के एक झुंड की ओर चल पड़ी.

''मुझे नहीं लगता, वहां कोई खूबसूरत नजारा दिखेगा,'' लिसा ने कहा, लेकिन चीका ने नहीं सुनी, इसलिए वह साथ चलती गई. चीका एक झाड़ी के पीछे छिप गई और बोली, ''मैं अकसर यहां एक दृश्य देखती हूं, आज उसे रिकौर्ड कर लूंगी.''

''अच्छा, क्या चीज है वह?'' लिसा ने हैरानी जताई. उस ने सोचा, जरूर कोई प्रवासी पक्षी आता होगा, इसलिए उत्साहित हो कर वह भी देखने लगी, पर सिवा 2-4 भेड़ों के वहां वैसा कुछ न था.

''देखो, वह आ गया, हल्ला मत करना, मैं इस की रिकौर्डिंग करूंगी,'' चीका ने कहा. यह सुन कर लिसा मुड़ी कि वह कुछ खूबसूरत पक्षियों को देख सकेगी. पर यह क्या? कोई खूबसूरत सी चीज आने के बजाय वहां एक भद्दी शक्ल का भेड़िया था.

''तुम भी अजीब हो चीका, यह भी कोई फोटो खींचने लायक सीन है, भेड़ और भेड़ियों की तस्वीर, फोटोग्राफरों को देखो, कितने सुंदरसुंदर पक्षियों के फोटो खींचते हैं.

''कितने राइटर बड़ेबड़े प्रवासी पक्षियों व जीवों के रंगरुप, उन की खूबसूरती के बारे में लिखते हैं जो पढ़ने में बड़े ही मजेदार होते हैं. तुम इन की फोटो ले कर क्या करोगे, इन में तो ऐसी कोई बात नहीं है, जो किसी को आकर्षित करे,'' लिसा ने खीझते हुए कहा.

चीका ने उसे चुप रहने का इशारा किया. उस ने कुछ फोटो खींचे और फिर वीडियो बनाने लगी.

बस्ती की 3-4 भेड़ें, हाथ जोड़ कर विली भेड़िया के सामने खड़ी थीं. उन्हें भयंकर आंखों से देख रहा था.

''अपनी जान प्यारी है, तो यह जमीन छोड़ कर कहीं और चले जाओ वरना मैं हर सप्ताह तुम में से एक को ले जाऊंगा, लौकअप में डालूंगा, डंडे मारूंगा और फिर मजे से चट कर जाऊंगा,'' विली ने रौब दिखाते हुए कहा.

''हम इस बारे में सोचेंगे हूजूर,'' बूढ़े भेड़ ने हाथ जोड़ कर कहा पर शानू भेड़ ने आवेश में बोला. ''नहीं हम अपनी जमीन छोड़ कर नहीं जाएंगे, हम अपनी जमीन इसे नहीं देंगे.''

विली ने घूर कर उसे देखा और एक लात दे मारी, बेचारा कराहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा. यह सारी घटना चीका के कैमरे में कैद हो रही थी, पर लिसा बोर हो रही थी उस ने फुसफुसा कर कहा, ‘‘क्या फुजूल की तस्वीरें ले रही हो? मैं चलती हूं.’’

लिसा जैसे ही झाड़ियों से बाहर निकली विली की नजर उस पर पड़ गई. साथ ही उस ने चीका और उस के कैमरे को भी देख लिया. बस फिर क्या था? वह कूद कर चीका के पास पहुंचा.

‘‘बित्ती भर की खरगोश, तू मेरी तस्वीर ले रही है,’’ विली ने चीका की गरदन पकड़ ली. चीका जोर से चीखा. उस की चीख सुन कर ढेर सारे जानवर वहां आ धमके. पहले तो इतने सारे जानवरों को देख कर विली घबरा गया, क्योंकि वह चीका को सबक सिखना चाहता था, पर सब के सामने अब वह कुछ नहीं कर सकता था. इसलिए उस ने चीका का हाथ पकड़ा और कहा, ‘‘चलो, तुम्हें लौकअप में बंद करता हूं.’’

‘‘मैं ने क्या जुर्म किया है?’’

‘‘तुम ने मेरी यानी एक इंस्पैक्टर की तस्वीर छिप कर खींची है?’’

‘‘मैं फोटोग्राफर व राइटर हूं. मैं ने तुम्हारी अत्याचार वाली तस्वीर ली है,’’ चीका ने बिना हिचके कहा.

‘‘तुम्हारी यह हिम्मत कैसे हुई, तुम एक पुलिस वाले की तस्वीर ले कर उसे सही गलत बता रहे हो,’’ विली ने गरज कर कहा.

‘‘राइटर और फोटोग्राफर हो, तो जा कर सुंदरसुंदर चीजों की तस्वीरें खींचो. मेरी तस्वीर लेगा तो तुझे सबक सीखा दूंगा. मेरे पास बहुत पावर है,’’ विली ने अकड़ दिखाते कहा.

वह आगे बढ़ा ही था कि उस की नजर भीड़ में खड़े जज बोन्नी भालू पर पड़ी और वह हक्काबक्का रह गया. जज बोन्नी एक अच्छा जज था. वह अन्याय के खिलाफ था.

चीका ने भी उन्हें देख लिया और बोली, ‘‘मैं काफी दिनों से देख रही थी, यहां के भेड़ों के साथ यह इंस्पेक्टर विली कितना क्रूर व्यवहार करता है, वह हमेशा यहां आता है, इन्हें मारतापिटता है, इन्हें इन की जमीन छोड़ कर भाग जाने को कहता है. यह सब जुल्म हमारे इस सुंदर से चंपकवन में हो रहा था.

‘‘दोस्तो, इसलिए मैं ने इस का वीडियो बनाया ताकि

सुबूत के साथ इस के गलत कारनामे को सब के सामने ला सके. यह अच्छा है कि हम अपनी खूबसूरत चीजों की तस्वीर लें पर साथ ही यह भी जरूरी है कि अपनी महल्ले में हो रहे जुल्म व अत्याचार को नजरअंदाज न करें. मैं एक राइटर और फोटोग्राफर हूं, इसलिए एक प्रैस वाला होने के नाते मेरा फर्ज था कि मैं इस जुल्म को अपने कैमरे में कैद करूं और आप सब को दिखांऊ ताकि मेरी बात पर यकीन करने का पूरा सुबूत आप के पास हो और फिर हम उन भेड़ों के साथ न्याय कर सकें.''

इतना कह कर चीका ने अपना कैमरा जज बोन्नी की ओर बढ़ा दिया.

जज बोन्नी ने देखा तो गुस्से से उन की आंखें लाल हो गईं, ''मेरे इलाके में यह अत्याचार हो रहा है और मुझे पता भी नहीं. अभी इसी वक्त इस विली को गिरफ्तार किया जाए. इसे कठोर सजा दी जाएगी.''

विली कुछ भी न कह सका. तुरंत ही सिपाही डुगडुग हाथी ने विली भेड़िये को गिरफ्तार कर लिया.

जज बोन्नी ने चीका की तारीफ करते हुए कहा, ''तुम ने बहुत अच्छा काम किया है. हमारे चंपकवन का कानून किसी को पावर अच्छे काम के लिए देता है, बुरे काम के लिए नहीं और प्रैस को पूरी आजादी है कि वह ऐसे बुरे लोगों के अपराध को सब के सामने लाने का काम कर सके. चंपकवन अत्याचारियों के लिए नहीं है. यहां छोटेबड़े सभी जानवर बराबर हैं.''

सारे जानवर चीका की तारीफ करने लगे. सच में चीका ने अपने कैमरे का बड़ा अच्छा उपयोग किया था.

लिसा भी अब उस के काम के महत्त्व को समझ गई थी. उस ने अपने काम से प्रैस का महत्त्व बढ़ा दिया था. ●

ढूंढ़ें और गिनती करें

29 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय जैगुआर यानी तेंदुआ दिवस है. ऐसे कितने तेंदुएं हैं जिन की पूंछ नहीं है.

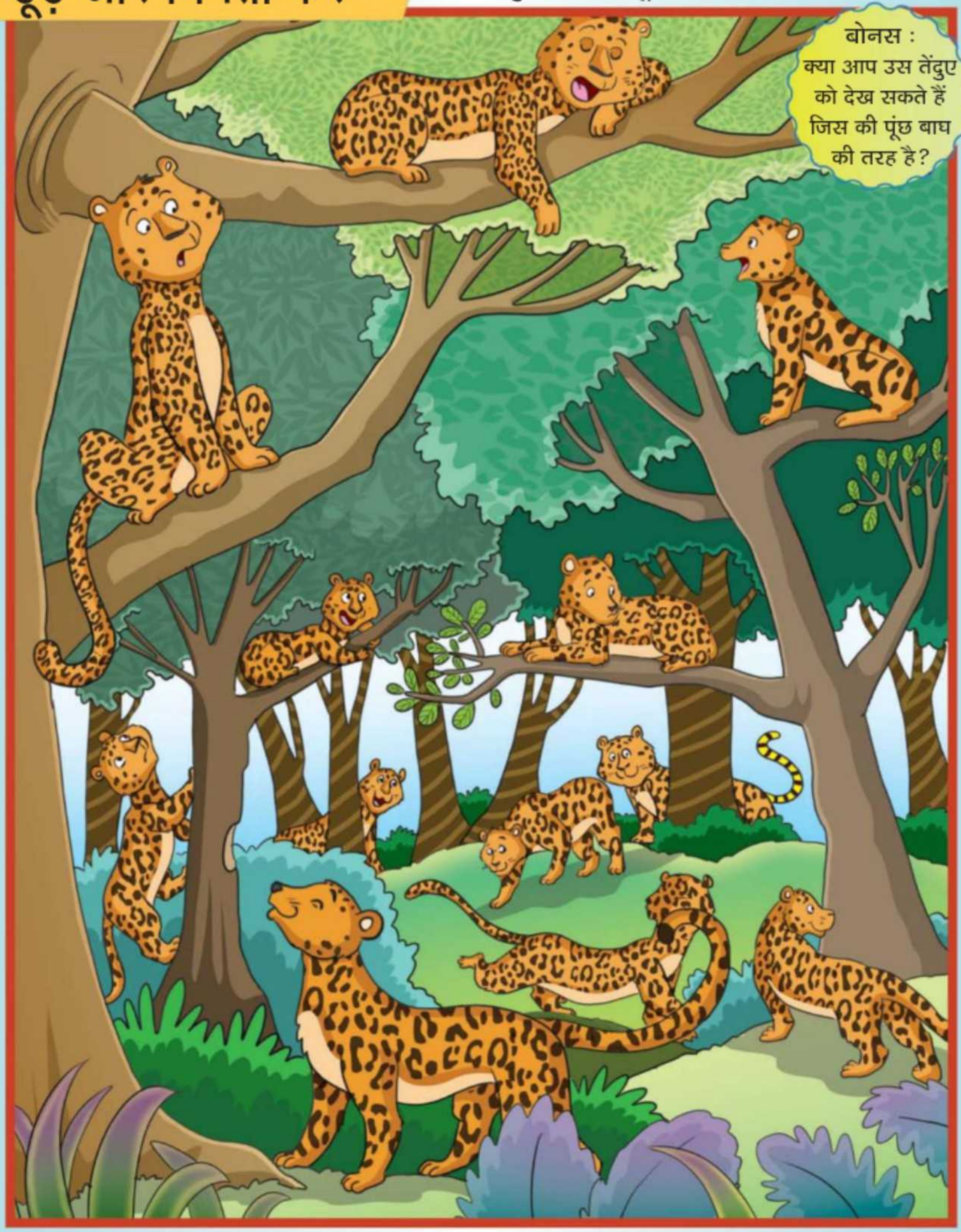

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चीकू

चित्रकथा : दास

चीकू और मीकू एकसाथ बैठे हुए थे. तभी एक बिल्ली वहां कूद कर आई.

भागो, भागो, एक एलियन इधर आ रहा है.

एलियन.

वह बिल्ली बहुत डरी हुई थी और तेजी से भाग रही थी. मुझे लगता है, हमें भी यहां से भाग लेना चाहिए.

चलो, हम पेड़ के इस कोटर में छिप जाते हैं.

चीकू और मीकू दोनों ही इस में छिप गए.

हां, ठीक है, अब हम एलियन के गुजरने तक इंतजार करेंगे.

उस नीले जानवर को देखो. एलियंस नीले रंग के होते हैं, सही है न?

लेकिन यह पूरी तरह एलियन जैसा नहीं जान पड़ता है. मुझे ऐसा लगता है कि यह डमरू गधा लग रहा है.

हुंह, अरे हां, यह तो डमरू है. लेकिन वह रो क्यों रहा है? चलो, उस से बातें करते हैं.

क्या बात है, डमरू? तुम नीले क्यों हो? और तुम रो क्यों रहे हो?

असल में, मैं कहीं जा रहा था और एक घड़ा जिस में नीली स्याही भरी थी, ले कर चल रहा था, जिस से कपड़ों को रंगना था. अचानक मैं किसी चीज से टकरा गया और घड़ा मेरे ऊपर गिर कर टूट गया.

ओह और धोबी ने इस के लिए तुम्हें जरूर डांटा होगा.

हां.

एक लोमड़ी जो पास से गुजर रही थी, उस ने तीन जानवरों को बातें करते हुए देखा.

यह कौन मेरी पूंछ खींच रहा है?

अरे, तो यह है एलियन.

तुम ने एलियन को देख लिया, अब इसी एलियन की एक किक भी तो लेते जाओ. ये रही किक...

हाय, मुझे बचाओ, आह...

ऐसा लगता है तुम में किसी एलियन की ताकत आ गई है.

अब तुम जाओ और इस नीले रंग से छुटकारा पाने के लिए नहाओ.

या फिर धोबी के साबुन वाली बाल्टी में यानी टब में एक गहरी डुबकी लगा लो.

अगर मैं ने उस धोबी के साबुन के टब को छू भी लिया तो वह मुझे फिर से डांटेगा, बूंहं...बूंहूं... बूंहूं...ऊं, ऊं.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र को पूरा करें.

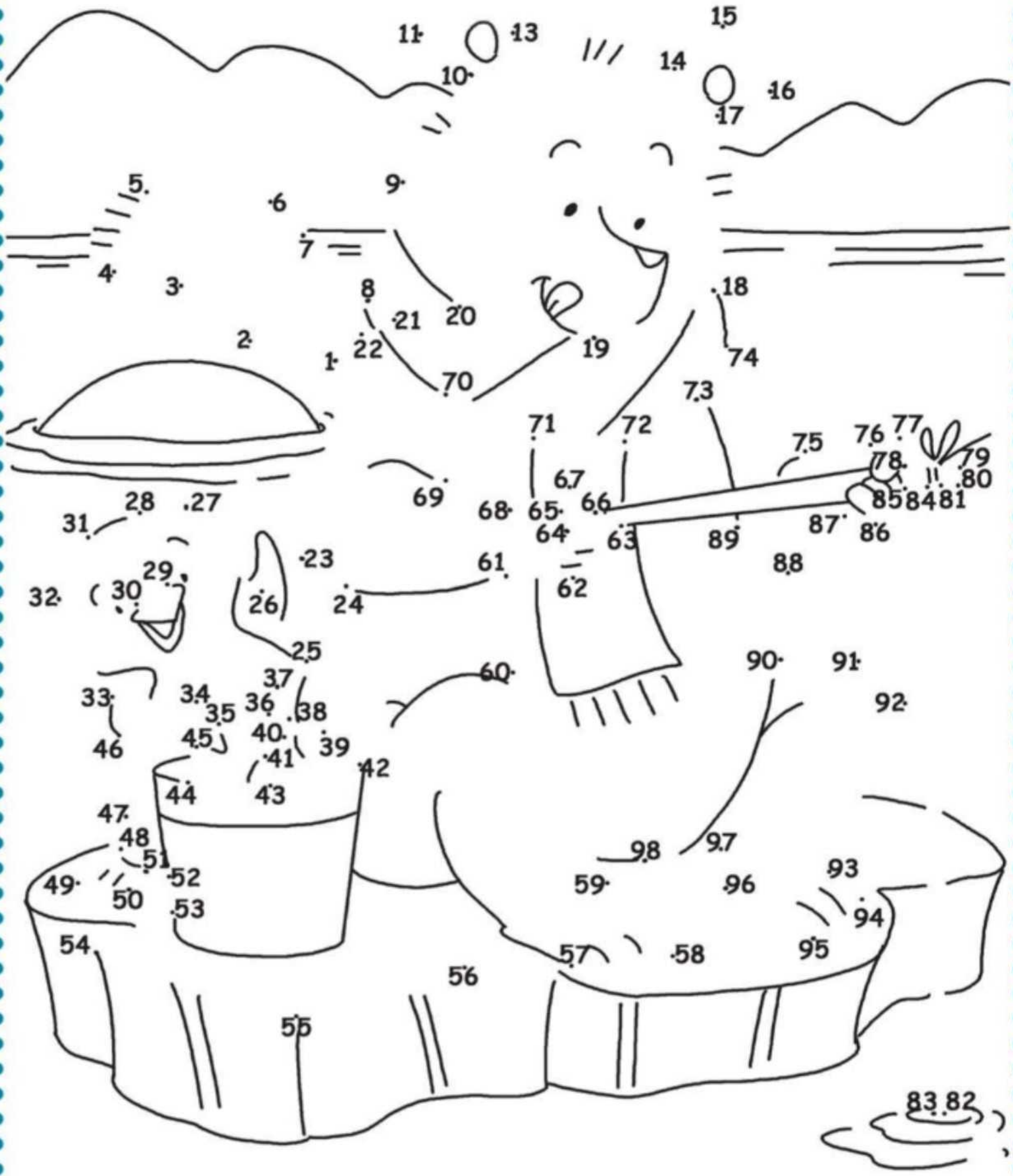

गिनती करें

कारें विभिन्न दिशाओं में जा रही हैं. नीचे दिखाई गई दिशाओं में कारों की गिनती करें और दिए गए बौक्सों में आप कितनी कारों को देखते हैं, उन्हें लिखिए.

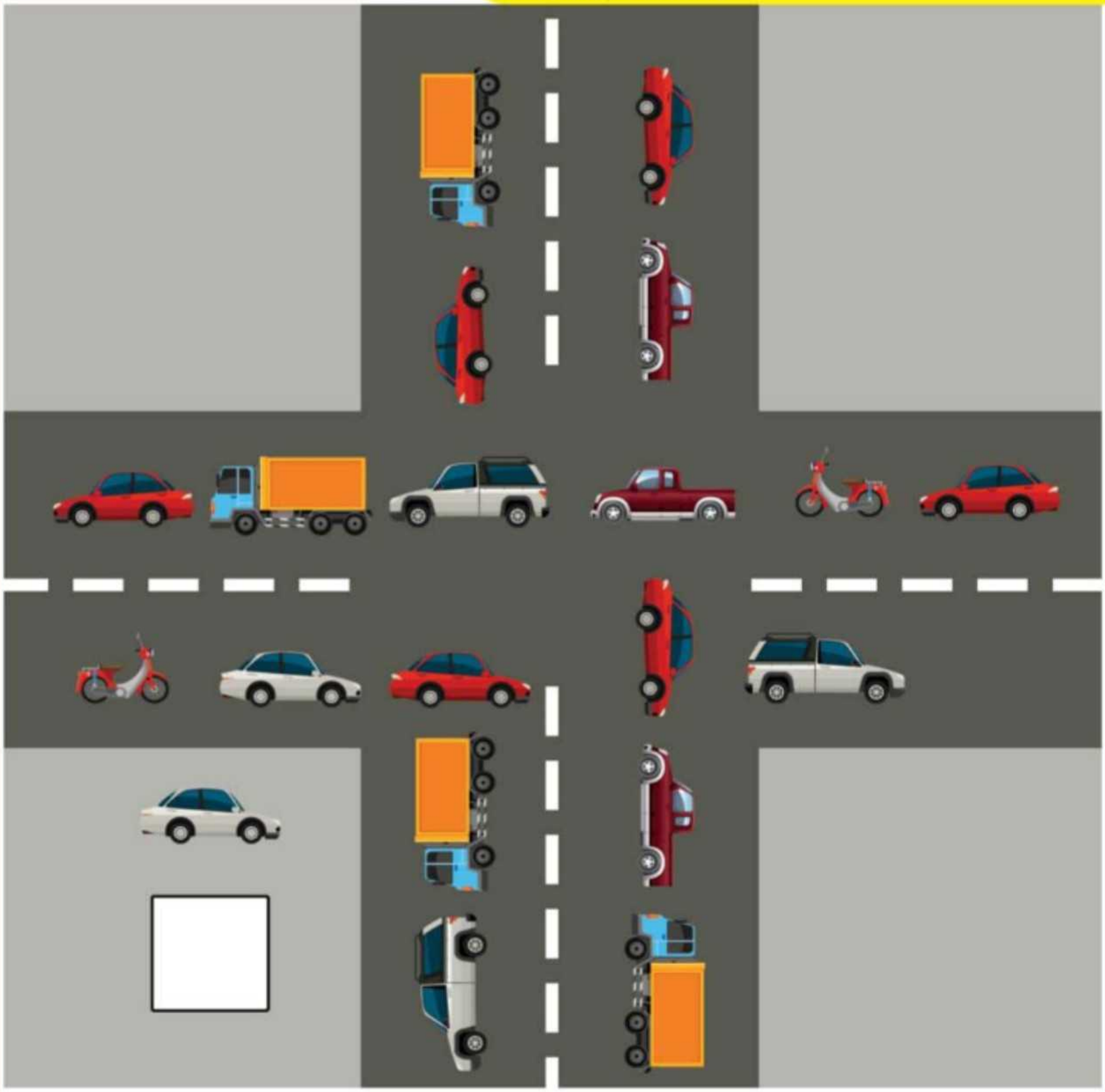

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

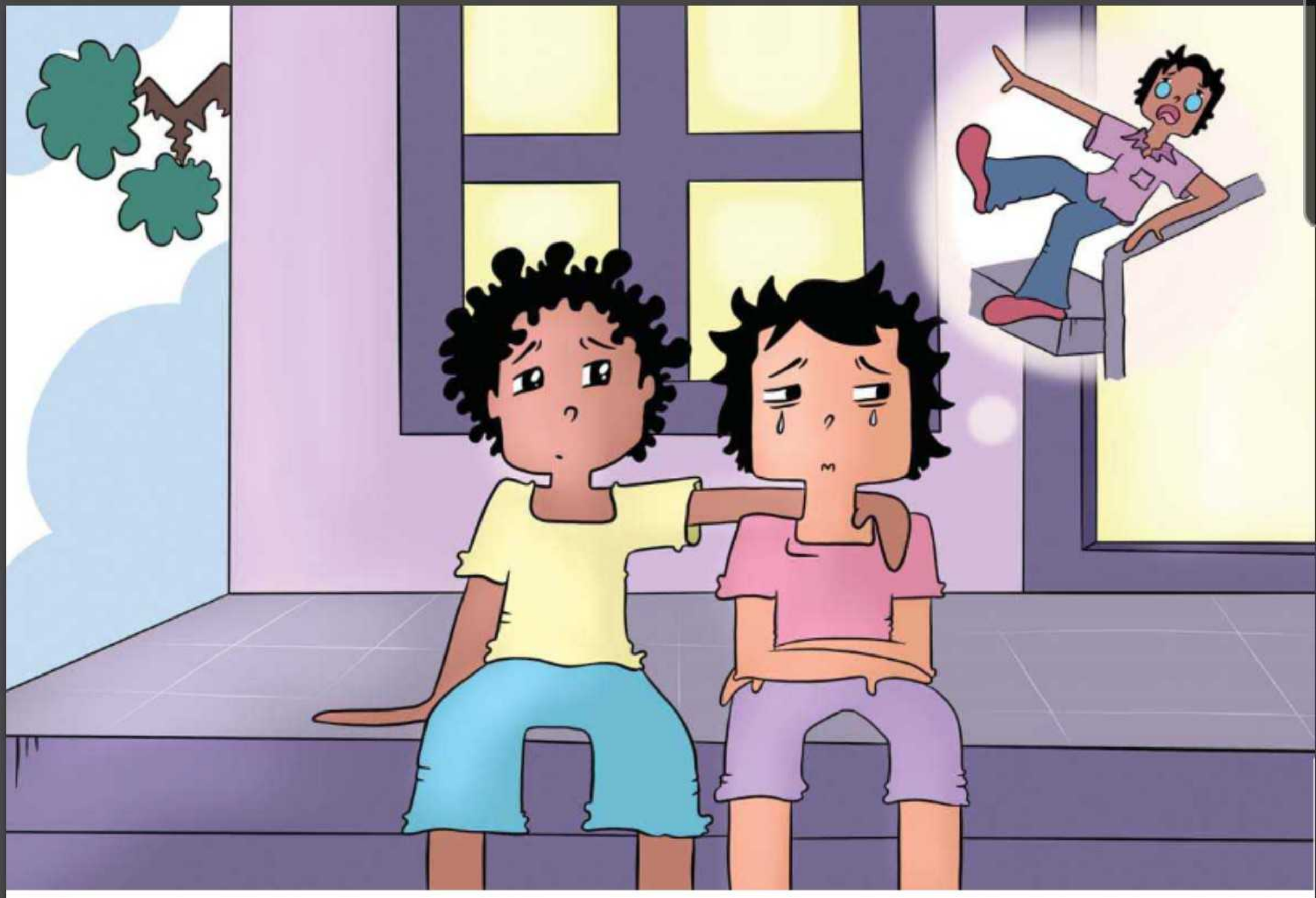

मददगार दोस्त

कहानी • पूनम बर्तवाल

समीर और आर्यन पक्के दोस्त थे, दोनों 8वीं कक्षा में पढ़ते थे. वे पढ़ाईलिखाई में एकदूसरे की मदद करते थे.

उन की दिनचर्या में सुबह गांव के बड़े मैदान में सैर करना, व्यायाम करना और शाम को खेलकूद करना शामिल था.

जिस दिन स्कूल की छुट्टी होती, दोनों काफी देर तक सुबह व्यायाम करते, खेलते. लेकिन आज छुट्टी का दिन होने के बावजूद आर्यन रोज सुबह की सैर पर नहीं आया. समीर उस का इंतजार करते हुए थक गया था, लेकिन उसे अपने दोस्त की चिंता हुई. समीर को लगा कि कहीं आर्यन बीमार तो नहीं हो गया है या उस के घर में कोई समस्या तो नहीं हो गई वरना वह सुबह की सैर पर जरूर आता. समीर ने सोचा.

आर्यन के घर पहुंच कर समीर ने आवाज लगाई, ''आर्यन, आर्यन,'' आर्यन अपने घर से बाहर निकला.

'आर्यन आज तुम सुबह की सैर पर क्यों नहीं आए? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?'' समीर ने पूछा.

आर्यन बोला, ''हां, दोस्त तबीयत ठीक है.''

''जब तबीयत ठीक थी तो फिर आज क्यों नहीं आए तुम सुबह की सैर पर?''

''बस ऐसे ही, मन नहीं कर रहा था, आज सैर करने का,'' आर्यन ने कहा.

समीर ने आर्यन का चेहरा देखा, वह उदास लग रहा था, वह बोला, ''आर्यन, तुम सच नहीं बोल रहे हो, कोई तो बात है, जिसे ले कर तुम उदास हो, परेशान हो. अपने दोस्त से तुम कुछ नहीं छिपा सकते. अगर कोई समस्या है तो हम मिल कर उस का हल निकालेंगे.''

पलभर में आर्यन के गाल आंसुओं से भीग गए. ''क्या बताऊं दोस्त, आज सुबह बाबा बाजार जाने के लिए तैयार हो रहे थे. वे हमारे बाग में लगी सब्जियों को बेचने के लिए बाजार में श्याम काका की दुकान पर ले कर जाने वाले थे, लेकिन बाबा फिसल कर गिर गए, उन्हें गंभीर चोट नहीं लगी लेकिन पैर में मोच आ गई है, सूजन भी है. मां बाबा के पैर में आई मोच की सिकाई कर रही हैं, लेकिन बाबा को दर्द हो रहा है.

''इस वजह से वह टैंपो चला कर सब्जियों की पेटियों को बाजार तक नहीं पहुंचा पाएंगे, अगर सब्जियां नहीं पहुंची तो बाबा को नुकसान होगा, श्याम काका भी परेशान होंगे. सब्जी 10 पेटियां की हैं. बाबा के अलावा गांव में कोई भी ऐसा आदमी अभी मौजूद नहीं है जो टैंपो चलाना जानता हो.''

आर्यन की बात सुन कर समीर बोला, ''तुम श्याम काका को फोन कर के क्यों नहीं कहते कि वह किसी को भेज दें, जो सब्जियां टैंपो में भर कर बाजार ले जाए.''

''हां, बात की थी भोला काका से. लेकिन उन का नौकर बीमार है, जो टैंपो चलाना जानता था और श्याम काका तो उम्रदराज हैं, वह अब टैंपो नहीं चला पाते हैं. उन्होंने एक साल पहले ही टैंपो चलाना छोड़ दिया था. वह भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं. समझ नहीं आ रहा है कि हम क्या करें? कल तक कुछ सब्जियां खराब भी होने लगेंगी, हमारे पास इन्हें सुरक्षित रखने का कोई इंतजाम भी नहीं है.''

आर्यन की समस्या सुन कर समीर सोच में पड़ गया, वह वास्तव में अपने दोस्त की समस्या को दूर करना चाहता था, उस की मदद करना चाहता था. अचानक समीर के दिमाग में एक विचार आया. वह आर्यन से बोला, ''तुम अपनी साइकिल निकालो. मैं भी कुछ देर में आया.''

लगभग आधे घंटे के इंतजार के बाद आर्यन ने देखा कि समीर अपने हमउम्र 8 बच्चों के साथ साइकिल चला कर उस के घर की तरफ आ रहा है. आर्यन को हैरानी हुई कि सभी बच्चे अपनीअपनी साइकिल ले कर उस के घर की तरफ क्यों आ रहे हैं?

समीर अपनी साइकिल पर सवार हो कर, आर्यन के पास पहुंचा और बोला, ''चलो आर्यन, सब्जियां बाजार श्याम काका तक पहुंचा कर आते हैं.''

आर्यन समीर की बात सुन कर हैरान हुआ. उस ने अपने दोस्त की तरफ हैरानी से देखा.

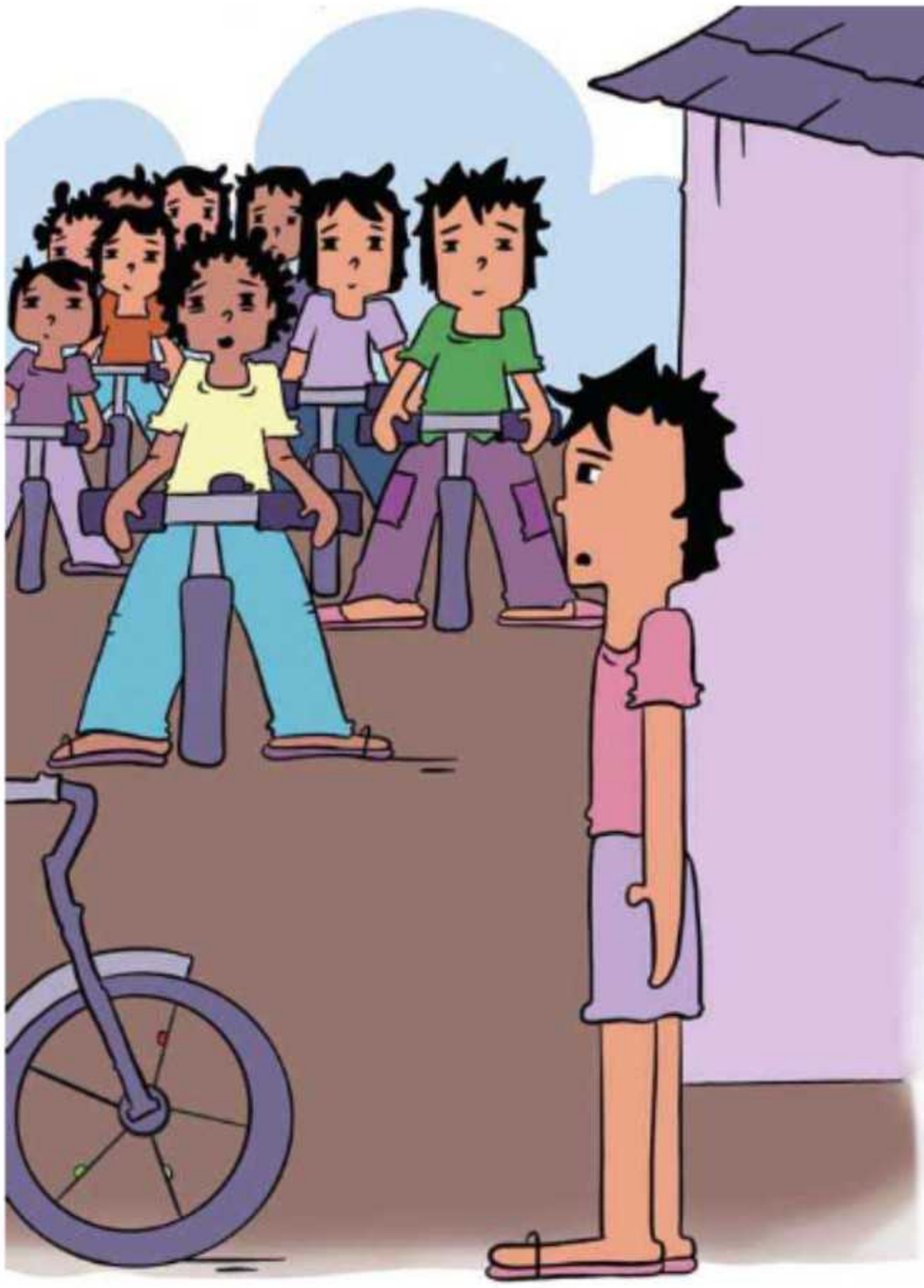

समीर बोला, ''अगर टैंपो नहीं है तो क्या हुआ, हम सब बच्चे मिल कर साइकिल से सब्जियां बाजार तक पहुंचाएंगे. वैसे भी साइकिल से बाजार तक जाने में हमें लगभग आधा घंटे का समय लगेगा. फिर अभी तो श्याम काका की दुकान खुलने में भी काफी समय बाकी है.''

''अब किस बात का इंतजार कर रहे हो? जो सब्जियों की पेटियां बना रखी हैं, हर एक को साइकिल के पीछे स्टैंड पर रखो और किसी रस्सी की मदद से बांध दो. मैं, तुम और आठ और बच्चे मिल कर अपनीअपनी साइकिल से बाजार तक इन्हें पहुंचा देंगे.''

अपने दोस्त की योजना सुन कर आर्यन की खुशी का ठिकाना न रहा. वह घर के भीतर गया और अपने मांबाबा को समीर की योजना बताई. आर्यन के बाबा लंगड़ाते हुए बाहर आए और उन्होंने समीर की तरफ देखा. वह बोले, ''तुम बच्चे इतना सामान ले कर बाजार तक जाओगे तो थक जाओगे.''

समीर ने आर्यन के बाबा की तरफ देख कर कहा, ''काका, हम बच्चे जरूर हैं, हो सकता है कि हम थक भी जाएं लेकिन हम जिम्मेदारी से सब्जियों को श्याम काका की दुकान में पहुंचा देंगे, आप हमारा यकीन कीजिए. आप चिंता मत कीजिए. हम ने अपनेअपने मम्मीपापा से अनुमति ले ली है.''

''हां, बाबा, हमें एक मौका दे कर तो देखिए,'' आर्यन बोला. सभी बच्चों ने भी आर्यन की हां में हां मिलाई.

बच्चों के आत्मविश्वास को देख कर आर्यन के बाबा और मां ने उन्हें बाजार जाने की स्वीकृति दे दी.

सभी बच्चों ने अपनीअपनी साइकिल पर सब्जी एकएक पेटियां बांधी और बाजार की तरफ चल दिए.

लगभग 3-4 घंटे बाद सभी बच्चे गांव लौट आए. आर्यन के बाबा और मां, बच्चों का इंतजार कर रहे थे. बच्चों को आता देख वे खुश हुए. समीर, आर्यन और सभी बच्चे भी खुश नजर आ रहे थे, उन्हें जो जिम्मेदारी दी गई थी, उन्होंने वह पूरी कर ली थी, सब्जियां श्याम काका की दुकान पर समय पर पहुंच गई थीं.

आर्यन की मां ने सभी बच्चों को घर के अंदर बुलाया. बच्चों को हाथमुंह धो कर बैठक में जा कर बैठने को कहा.

समीर, आर्यन और सभी बच्चे बैठक में गपशप करते हुए मुसकरा रहे थे. तभी आर्यन की मां बच्चों के लिए ताजा फलों का जूस ले कर आईं. जूस देख कर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा. सभी बच्चों ने ताजे जूस का आनंद लिया. ●

ऊपर से यह कैसा दिखता है?

सही विकल्प को चुनें.

1

A

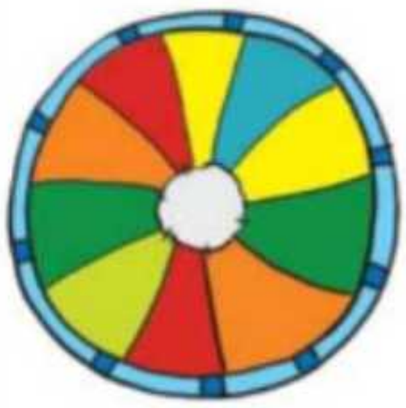

B

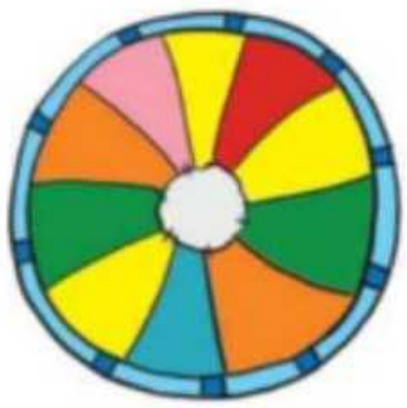

C

D

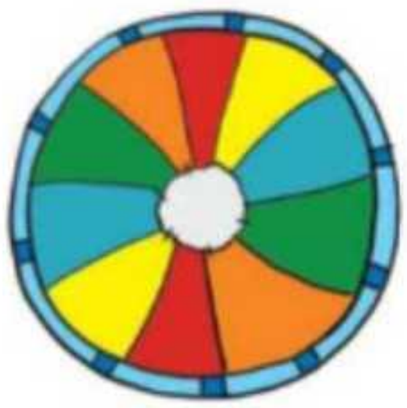

E

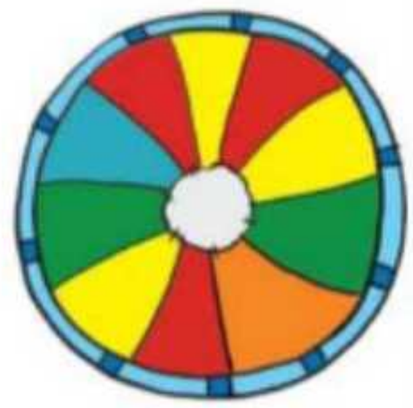

2

A

B

C

D

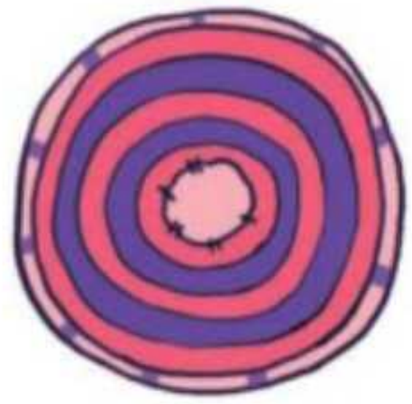

E

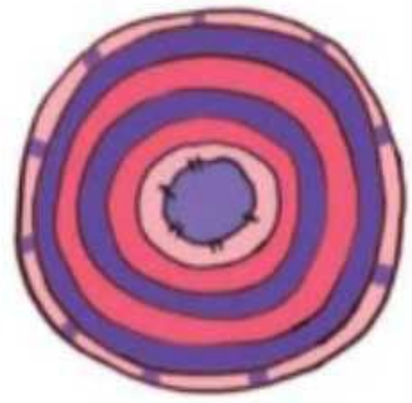

3

A

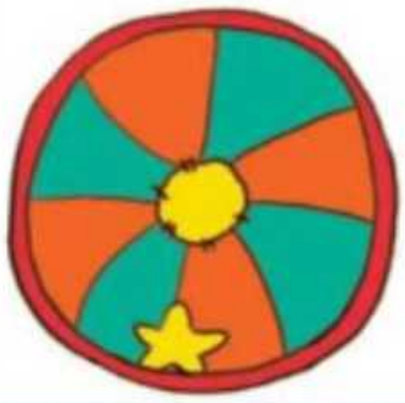

B

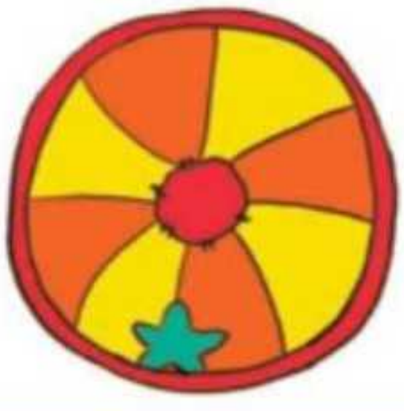

C

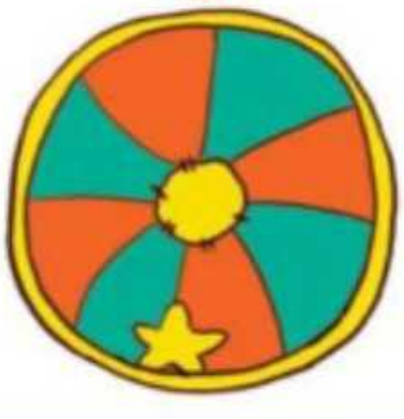

D

E

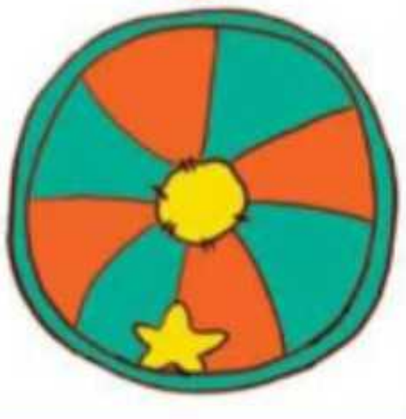

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चित्र पूरा करें

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

तितली

द्वारा - पलक शाह

स्मार्ट

पाइप क्लिनर्स और बटंस का इस्तेमाल करते हुए एक रंगीन खूबसूरत तितली बनाइए.

आप को चाहिए : आइसक्रीम स्टिक, ग्लू, 2 पाइप क्लिनर्स, बटंस, वूलेन पौमपौम, गूगली आंखें.

ऐसे बनाएं :

1. आइसक्रीम स्टिक पर बटंस ग्लू लगा कर चिपका दें और एक किनारे पर थोड़ी जगह छोड़ दें.

2. वूलेन पौमपौम को चित्र अनुसार चिपका दें.

3. पंख बनाने के लिए पाइप क्लिनर को इस तरह से मोड़ लें.

4. स्टिक के ऊपर पंखों को ग्लू लगा कर चिपका दें. गूगली आंखें जोड़ दें.

अब आप का बटरफ्लाई यानी तितली बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

फिलो और वैली का खेल हुआ समाप्त

कहानी ● एस वरालक्ष्मी

चंपकवन के निवासियों के कपड़ों को इस्त्री यानी आइरन कर के फिलो लोमड़ अपनी आजीविका चलाता था.

जब वह अपने इस्त्री के काम में लगा हुआ था तभी उस का दोस्त वैली भेड़िया उस के पास आया.

''तुम्हारे दिन कैसे गुजर रहे हैं?'' फिलो ने उस से पूछा.

''बहुत ही निराशाजनक, काश, हम कहीं बाहर जा पाते. क्या तुम्हें हाल फिलहाल कोई खजाना कहीं प्राप्त हुआ?'' वैली ने खींसे निपोरते हुए पूछा.

फिलो ने खुश हो कर जवाब दिया, ''अरे हां, मुझे कल हैरी घोड़े के पैंट की जेब से 100 रुपए का नोट मिला, बेचारा हैरी तो निश्चित होगा कि उस ने जेब में इसे छोड़ दिया था, लेकिन मैं ने हमेशा की तरह कह दिया कि जेब में कुछ भी नहीं था. अब मुझे इस का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए?''

इस से पहले कि वैली कुछ कह पाता, फिलो ने उत्साह से कहा, ''अरे, जैकपौट, देखो, मैं ने अप्पू हाथी की जेब में क्या पाया. एक मूवी जो आज रात दिखाई जाएगी, के लिए दो टिकटें और हैरी की जेब वाले 100 रुपए से हम पौपकौर्न और समोसे खाने के लिए खरीद सकेंगे, यप्पी. वैली, चलो अब हम लुढ़कना शुरू करें.'' अत्यधिक खुशी महसूस करते हुए दोनों नाचने लगे.

अचानक वैली ने अप्पू को अपनी ओर आते हुए देखा और फिलो को इशारा किया कि वह बात करना बंद कर दे. फिलो ने फिर से कपड़ों पर इस्त्री करना शुरू कर दिया.

दोनों ने अपने गले सफ किए और फिलो फिर से अपने काम में जुट गया.

''फिलो, क्या तुम ने मेरी जेब से दो टिकटें निकाली हैं?'' अप्पू ने चिंतित हो कर पूछा.

फिलो ने हैरानी जताते हुए कहा, ''क्यों नहीं, अभी देखता हूं, यहां कुछ भी नहीं है, खुद ही देख लो.''

उस ने अप्पू के लिए जेबों को उलट दिया ताकि वह

देख सके और अंत में कहा, ''मुझे खेद है, तुम ने इसे जरूर कहीं और रख दिया होगा यहां पर तो नहीं है.''

''फिलो सही कह रहा है. यहां कोई भी टिकट नहीं है,'' वैली ने तुरंत कहा, वह थोड़ा घबराया हुआ दिख रहा था.

बेचारा अप्पू अपनेआप बड़बड़ाता हुआ वहां से चल दिया कि वह हाल के दिनों में दिमाग से कितना पैदल हो गया था. उस के जाने के बाद दोनों दिल खोल कर हंस पड़े.

''अब तुम आज रात के लिए हमारे कपड़े उठाओ,'' वैली ने कहा.

''हम फुरू लोमड़ और विक्की भेड़िया के कपड़े पहनेंगे. वे दोनों एकसाथ दूसरे जंगल में गए हैं और कल तक ही वापस लौटेंगे. उन के कपड़े हमारे आकार के ही हैं. बाद में मैं फिर से उन कपड़ों पर इस्त्री कर दूंगा.'' फिलो ने अपने दांत दिखाते हुए कहा.

''आज की रात हमारी रात है. चलो, रौक एन रौल खेलें,'' वैली अपना हाथ लहराते हुए खुशी से चिल्लाया.

इस के बाद वे रात में सिनेमाघर के दरवाजे खुलने के इंतजार में बाहर खड़े थे.

उन के कपड़े बहुत ही महंगे दिख रहे थे और उन्होंने कपड़ों से मैच करते हैट पहने हुए थे.

अपने कौलर को खुजाते हुए वैली ने कहा, ''यह वास्तव में बहुत गरम है. क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता है कि हम ने इस गरम मौसम में इन कपड़ों को पहन कर बहुत बड़ी गलती कर दी है?''

फिलो ने कहा, ''अभी के हालात में सिर्फ यही कपड़े हमारे पास उपलब्ध थे. खैर, अन्य जानवर भी हैं जो ऐसे कपड़े पहने हुए हैं. चिंता न करो, एक बार जब हम एयरकंडीशन वाले सिनेमाघर के अंदर होंगे, तो सबकुछ ठंडा हो जाएगा.''

वैली ने खुद को अपने हैट से पंखा करते हुए कहा, ''लेकिन ये टोपियां क्यों? वे बहुत ही असहज क्यों हैं?''

वह बड़बड़ाने लगा.

अचानक फिलो को अप्पू दिखाई दिया और उस ने तुरंत अपने हैट को नीचे खींचा ताकि चेहरा छिप जाए और ऐसा ही करने के लिए वैली को धक्का दिया.

''मुझे आशा है कि अब तुम समझ गए होंगे कि मैं ने हैट पहनने पर क्यों जोर दिया था,'' फिलो ने कहा

जब दोनों ने अपनी पीठ अप्पू की तरफ कर ली थी.

उन के लिए खैरियत रही कि दरवाजे खुल गए थे और वे जल्दी से अंदर घुस गए और अपनी सीट पर जा कर बैठ गए.

उन के डर का तब ठिकाना न रहा, जब उन्हें अप्पू अपनी ओर आता दिखाई दिया.

उन के दिलों पर हथौड़े बरस रहे थे और उन्होंने अपनी सांसों को रोक रखा था, लेकिन अप्पू मुड़ा और उन के ठीक सामने की सीट पर बैठ गया.

लेकिन सीट पर बैठने के पहले उस ने एक पल के लिए उन हैट्स यानी टोपियों को अजीब तरह से देखा. न सिर्फ उसी ने बल्कि बाकी सभी जानवरों ने भी उन की टोपियों की वजह से उन्हें बड़े अजीबोगरीब नजरों से देखना शुरू कर दिया था.

टोपियां उतारने से पहले वे रोशनी के मंद होने की प्रतीक्षा करने लगे. अचानक डोडो गधे ने पीछे से उन्हें टोका और कहा कि अपनी टोपियां हटाओ.

जल्दी से फिलो पीछे मुड़ा और बोला, ''हम नहीं हटाएंगे, तो तुम क्या कर लोगे?''

पैटी तेंदुआ जो डोडो की बगल में बैठा था, प्यार से बोला, ''फिर तो तुम्हें थिएटर छोड़ना होगा.''

पैटी को देखते ही वे शांत ही वे शांत हो गए और नम्रता से अपनी टोपियों को उतार लिया. उन्होंने तब तक अपनी सीट पर नीचे झुक कर बैठने का फैसला किया जब तक कि मूवी चलनी शुरू न हो जाए.

खैरियत की बात यह थी कि अप्पू पीछे नहीं देख रहा था. बत्ती बंद हो गई और मूवी परदे पर चलनी शुरू हो गई. सामने बैठे अप्पू के रूप में खतरे के बावजूद वे मूवी का आनंद लेने में कामयाब रहे.

जल्दी ही इंटरवल का समय हो गया. वैली ने फिलो को हल्का सा धक्का दिया और फुसफुसा कर बोला, ''हमें कुछ पौपकौर्न खरीदने के लिए बाहर जाना चाहिए.''

ठीक तभी अप्पू उठ खड़ा हुआ और थिएटर से बाहर निकल गया.

फिलो ने सुझाव दिया, ''हमें अप्पू के वापस आने का इंतजार करना चाहिए.''

वैली ने उसे याद दिलाया कि वहां रहना बुद्धिमानी की बात नहीं होगी क्योंकि यह थिएटर था और जब वह वापस आएगा तो अप्पू आसानी से ढूंढ़ लेगा.''

फिलो ने कहा, ''तुम बिलकुल सही कह रहे हो. चलो, बाहर चलते हैं.''

दोनों बाहर चले गए और अप्पू को ढूंढ़ने लगे. उन्होंने उसे पौपकौर्न का एक बड़ा सा टब खरीदते हुए देखा. इसलिए उन्होंने फैसला किया कि पौपकौर्न

न खरीद कर आगे वाले काउंटर से कोल्डड्रिंक्स खरीद लेंगे जो थोड़ी ही दूरी पर था.

अपनी कोल्डड्रिंक्स लेने के बाद जब उन्होंने अप्पू को थिएटर के अंदर जाते हुए देखा तो राहत महसूस करते हुए उन्होंने अपनी टोपियां उतारीं और अपनी कोल्डड्रिंक्स पीने के लिए एक बेंच पर बैठ गए.

''आ गर्र्र्र,'' कुछ जानवरों ने अपने गले साफ किए. दोनों अनजान बने कोल्डड्रिंक्स पीने में व्यस्त रहे.

उन जानवरों ने उन का ध्यान खींचने के लिए एक बार फिर अपने गले खंखारे.

चिढ़ कर फिलो और वैली ने जब उन की ओर थोड़ा ध्यान दिया और देखा तो उन्हें जोरदार झटका लगा.

फुरू लोमड़ और विक्की भेड़िया उन के ठीक सामने खड़े थे और उन के कूल्हे पर हाथ रखे हुए थे, जिस से दोनों की कड़ी नजरें उन से टकराईं.

कोल्डड्रिंक्स की बोतलें उन के हाथ से छूट गईं और फिलो हक्काबक्का हो कर कभी फुरू तो कभी विक्की को देखने लगा.

वह हकलाया, ''मैं...मैं... हम...ह...''

गुस्से में फुरू चिल्लाया, ''तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मुझे खुशी है कि हम ने आज शाम को लौटने का फैसला किया था और यह बहुत ही संयोग की बात है कि तुम को यहां इस हाल में देख लिया.''

होहल्ला सुन कर अब सभी उन को देखने के लिए उन की ओर मुड़ गए.

''और अब इस तथ्य को बताने की कोई जरूरत नहीं है कि इन दोनों ने मेरी टिकटों के बल पर अंदर प्रवेश पाया है जिन्हें मेरे शर्ट की इस्त्री करते समय इस ने जेब से चुरा लिया था,'' अप्पू ने चहकते हुए कहा जो अब थिएटर से बाहर आ गया था.

दोनों किसी की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर सके क्योंकि सब के सामने वे एक्सपोज हो चुके थे.

''आओ, तुम दोनों को मैं एक ऐसी जगह ले चलता हूं, जहां तुम्हारा गरमजोशी के साथ स्वागत किया जाएगा, जो यहां के विपरीत होगा,'' पैटी तेंदुए ने उन के कंधे पर अपने पंजे को रखते हुए कहा. उन्होंने यह पूछने की हिम्मत नहीं की कि जगह कहां थी, उन्होंने अनुमान लगाया कि यह जगह पुलिस स्टेशन थी. ●

दादाजी और वर्ल्ड हैलो डे

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल अपने दोस्तों को फोन कर रहे थे जबकि दादाजी एक किताब पढ़ रहे थे.

हैलो, हैलो, हैलो...

मुझे फोन दो. अब मेरी बारी है.

क्या बात है, बच्चो? क्या नैटवर्क खराब है?

नहीं दादाजी, हैलो कहने के बाद हम लाइन को डिसकनैक्ट कर रहे हैं.

दादाजी, आज 21 नवंबर है, वर्ल्ड हैलो डे यानी विश्व हैलो दिवस हैलो कहने का सब से बढ़िया तरीका, कम से कम 10 लोगों को हैलो करने का.

लेकिन क्यों?

बच्चो, तुम दोनों ने ही कुछ अच्छा करना चाहा, लेकिन जरा सोचो, तुम ने सही काम किया क्या?

हम दोनों ने फोन पर 5 लोगों को हैलो कहा है.

आप के कहने का क्या मतलब दादाजी?

क्या तुम जानते हो कि यह हैलो दिवस क्यों मनाया जाता है?

एकदूसरे का अभिवादन करने के लिए.

नहीं, इस दिवस को मनाने का उद्देश्य यह है कि अगर हम एक समस्या का समाधान बिना किसी हिंसा के शांति से करना चाहते हैं, तो सब से बढ़िया तरीका एकदूसरे से संवाद करना है.

और अगर बातचीत की शुरुआत एकदूसरे के अभिवादन से की जाए तो यह अच्छा होता है. विश्व हैलो दिवस सभी देशों के बीच बातचीत को बढ़ावा देते हैं जो देश अपनी समस्याओं को सिर्फ बातचीत के द्वारा हल करने की जरूरत महसूस करते हैं.

ओह, हम तो यह बात नहीं जानते थे. लेकिन इस की शुरुआत कब हुई थी?

25 अक्तूबर 1973 से, जब अरब देशों और इजरायल के बीच युद्ध चल रहा था, जिसे रामाडान युद्ध या किप्पूर युद्ध के नाम से भी जाना जाता है.

इस युद्ध के अंत में शामिल देशों के बीच जो पहला शब्द बोला गया था. वह था, हैलो.

वाह, बहुत अच्छा.

SONAL

हां, दादाजी, कोई समस्या बातचीत के द्वारा सुलझाई जा सकती है.

हां, लेकिन तुम दोनों तो अपने दोस्तों को सिर्फ हैलो कर फोन काट कर चुप हो गए. इस से उन्हें बुरा महसूस हुआ होगा.

हां, और इस से प्रेरित हो कर ब्रायन और माइकल मैक्रोमैक ने इसे मनाने का फैसला किया और विश्व के नेताओं को 7 भाषाओं में 1360 पत्र लिखे और उन्हें 21 नवंबर 1973 को विश्व हैलो दिवस मनाने के लिए इस में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया.

आप ने सही कहा दादाजी, मैं सभी को फिर से फोन करूंगा और उन्हें बताऊंगा कि पहले फोन क्यों डिसकनैक्ट कर दिया था.

हां, मैं भी बोलूंगी.

पत्थरों को रंगें

सैंथा जनजाति की गिनती करने की एक अजीब तरह की प्रणाली होती है. पत्थरों के अलगअलग ढेर अलगअलग मूल्यों को प्रस्तुत करते हैं. क्या आप पत्थरों को रंग सकते हैं ताकि वे हमारे अंकों का मतलब समझ सकें?

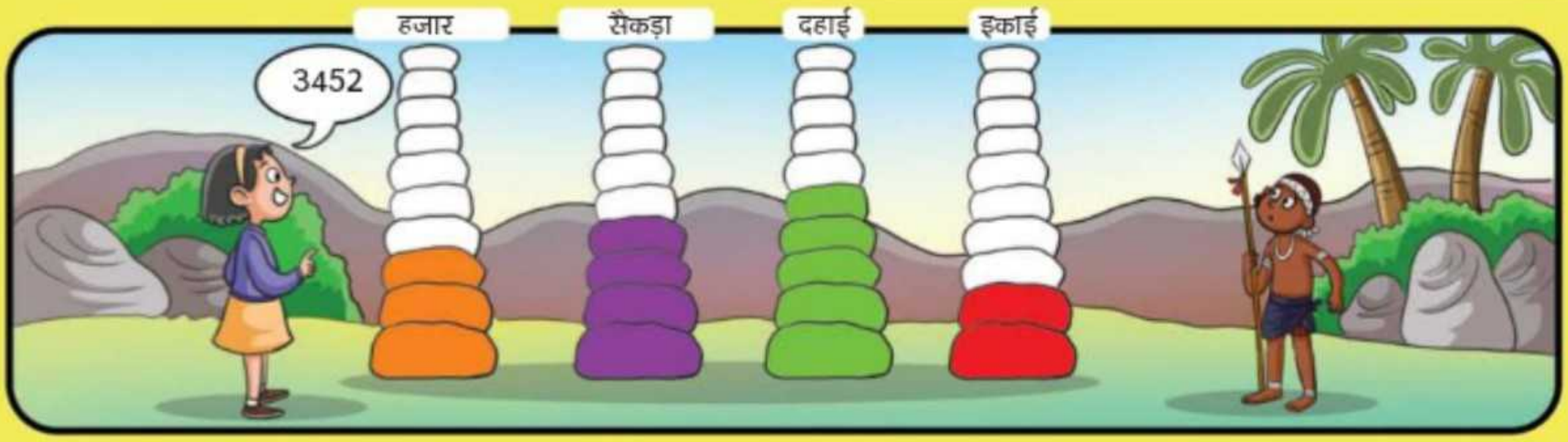

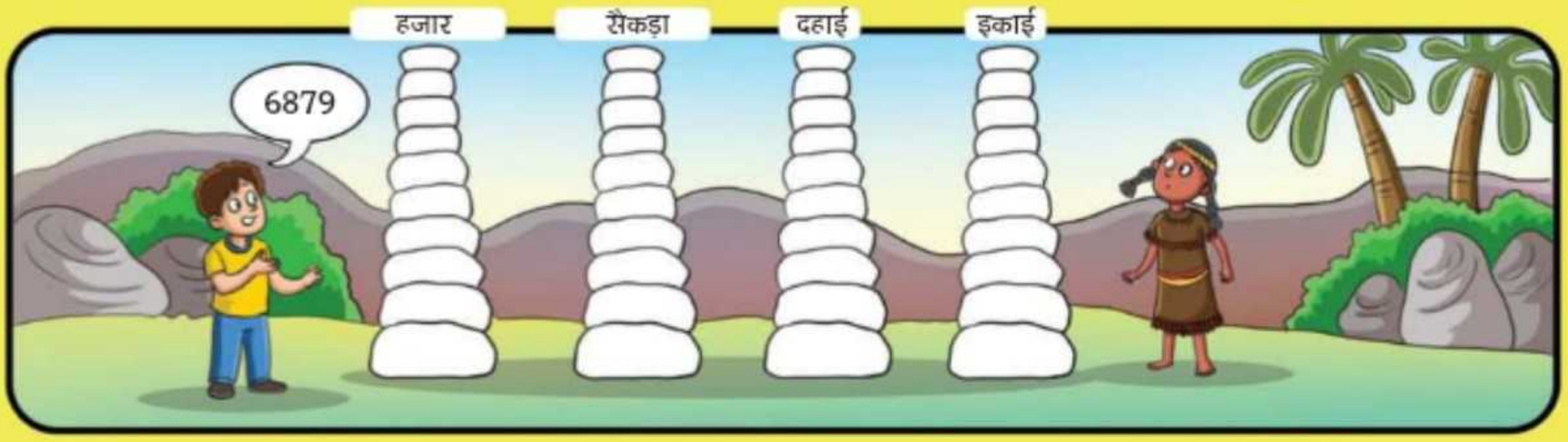

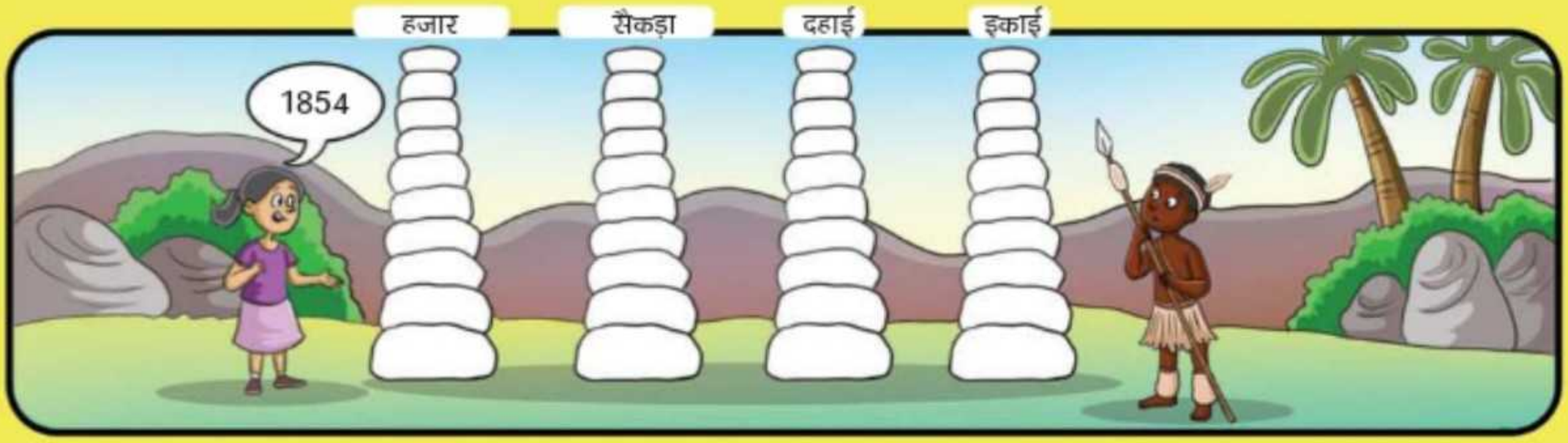

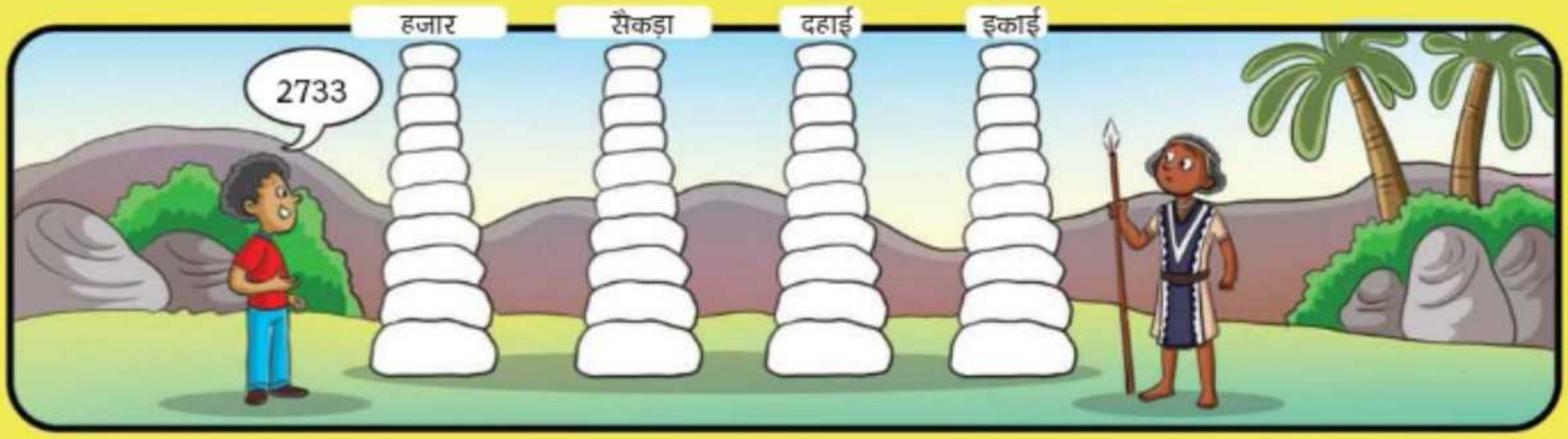

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

छिपे चित्र ढूंढ़ें

नवीन ने अपने पास के एक आइसक्रीम प्रदर्शनी की तस्वीरे खींची और 12 तस्वीरों को प्रिंटेड करवा लिया, जिन्हें वह अब ढूंढ़ नहीं पा रहा है. उन्हें ढूंढ़ने में उस की मदद कीजिए.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

नन्ही कलम से

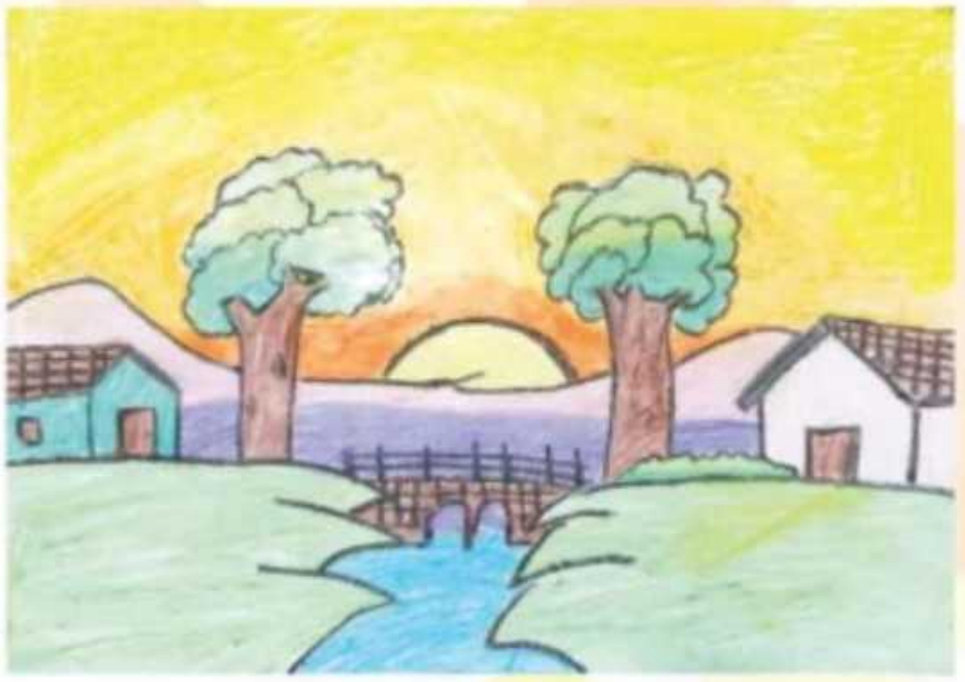

सत्त्व त्रिवेदी, 8 वर्ष, अहमदाबाद

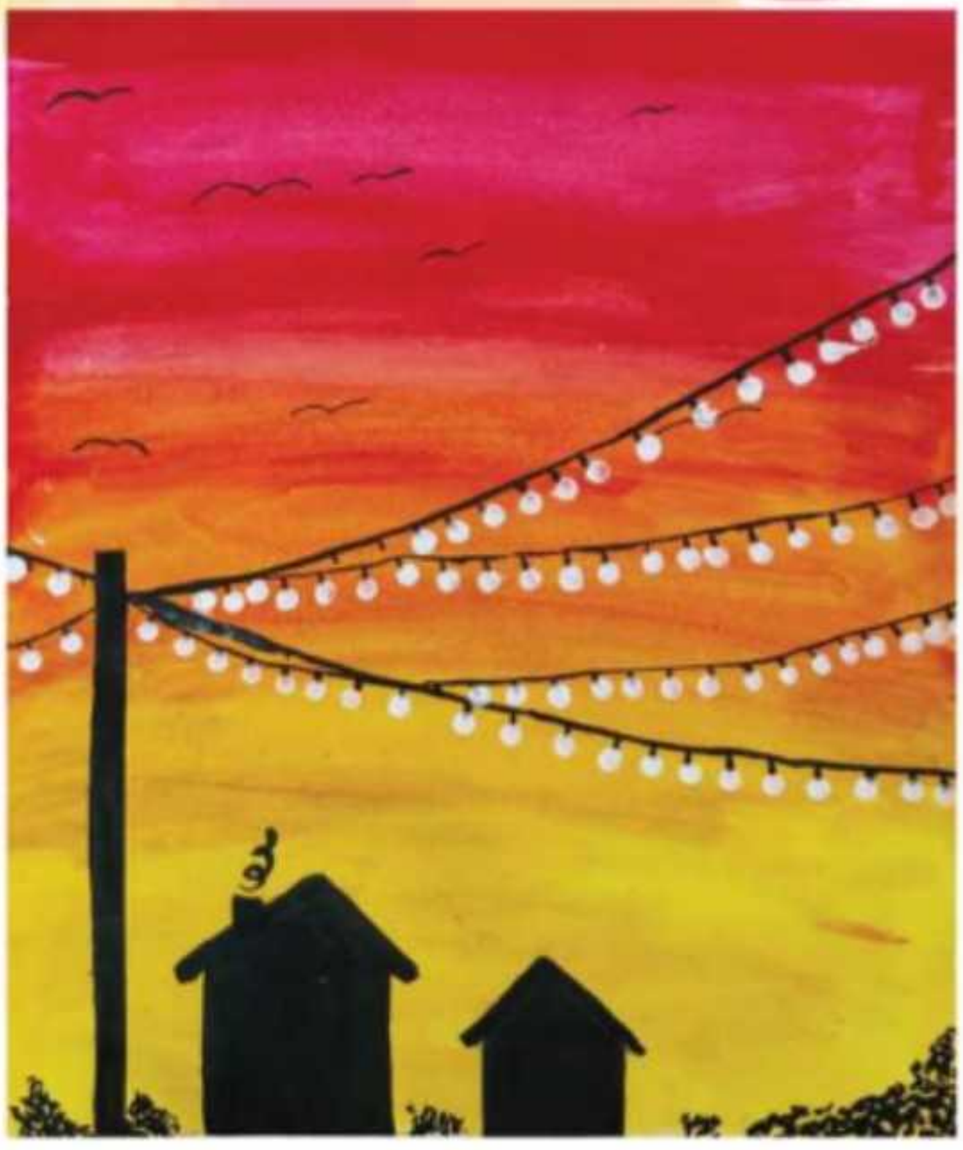

सान्वि पुरी, 9 वर्ष, नोएडा

उम्र के बंधन से परे दोस्ती

मैं आप को एक बूढ़े आदमी की कहानी बताने के लिए आई हूं. बचपन में वह अकसर प्लेग्राउंड में दौड़ा करता था और अपनी शरारती योजनाओं से लोगों को परेशान किया करता था. अपने बुढ़ापे की उम्र में वह निराशा महसूस करता था. समय बिताने के लिए कई दिनों तक खिड़की के पास बैठा करता. उसे कोई रास्ता नहीं सूझता था, लेकिन एक दिन उसे एक बच्चे की तरफ से कौल आया, जो उसे बहुत प्यार करता था, सब से ज्यादा प्यार. वह अपने सभी विचारों और कहानियों को उस के साथ साझा करता, जिस में डरावने भूतों और राजा की कहानियां होतीं. उन की दोस्ती धीरेधीरे बढ़ती चली गई, एक ऐसे मुकाम पर आ गई जिस में जहां से वे अलग नहीं हो सकते थे. दादाजी और पोता एकदूसरे को बहुत प्यार करने लगे थे. हालांकि लौकडाउन की वजह से वे कभी एकदूसरे से नहीं मिले.

शरण्या चौधरी, 12 वर्ष
कोलकाता

ओह, मेरा सूरज

तुम कितना तेज चमकते हो और अपनी तेज गरमधूप हमें देते हो. जब तुम चमक रहे होते हो, तब मेरी त्वचा भी चमकती है. तुम्हारी किरणों के संग छाया खेलती हैं. मेरी छाया बढ़ने लगती है, तुम उसे नियंत्रित करते हो, क्योंकि वह तुम से संबंधित है. बादलों के साथ तुम लुकाछिपी खेलते हो, बच्चे की तरह नन्हे और नम्र बन जाते हो. सभी की तुम ही जिंदगी हो, तुम्हारा चमकना एक तेज और मजबूत चाकू की तरह है. तुम बारिश के मौसम में निस्तेज हो जाते हो, जब तुम्हारे बादलों जैसे दोस्त चीखने रोने लग जाते हैं. तुम्हारी चमक इतनी पीली है, जैसे यह स्वर्ण यानी सुनहरे घास के मैदान जान पड़ती है. तुम नीचे की एक घाटी से उगते हो और समुद्र के बहाव में डूब जाते हो. पूरे दिन तुम आसमान में रहते हो, तुम्हें तो मैं कभी भी गुडबाय नहीं कहूंगी.

आरुषि जितेश, 11 वर्ष

आद्या गुप्ता, 7 वर्ष
नई दिल्ली

तान्या टंडन, 7 वर्ष, सिंगापुर

प्रकृति

चारों तरफ वृक्ष हैं, उन की जड़ें जमीन के अंदर हैं. जड़ीबूटियां, झाड़ियां, पेड़ और लताएं बीवरों यानी ऊदबिलावों को लकड़ियां देते हैं. पत्ते स्वतंत्र रूप से लहराते हैं, आकाश क्या सचमुच में प्यारा नहीं लगता है? प्रकृति हमें बहुत सारी चीजें देती हैं, जैसे कि पंख फडफड़ा कर उड़ती हुई चिड़ियां और जड़ीबूटियां, जो बहुत ही मुलायम होती हैं, जिन्हें कंपोस्ट यानी खाद में परिवर्तित किया जा सकता है. झाड़ियां थोड़ी बड़ी होती हैं, जिन के तने बहुत ही पतले होते हैं. पेड़ सब से बड़े होते हैं, इन के तने बहुत मोटे होते हैं. प्रकृति सब से अच्छी चीज है, अच्छी जिंदगी जीने के लिए इस की रक्षा करें.

सामराह हसन, 10 वर्ष
बिहार

शिवांषी अग्रवाल, 8 वर्ष
गाजियाबाद

टी आर अधिराज, 6 वर्ष, कर्नाटक

लौकडाउन

जून आने तक लौकडाउन जाएगा. मैं नहीं जानता कि मैं क्या करूं. सिर्फ एक धुन में बैठता और खेलता हूं, मेरे दिमाग में सिर्फ एक बात आती है कि कब मैं नीचे जाऊंगा और खेलूंगा. अरे लौकडाउन, ओह लौकडाउन, जितना जल्दी तुम जा सकते हो, कृपया चले जाओ, लौकडाउन. मेहरबानी करो, जाओ, तुम चले जाओ. मुझे सिर्फ अपने घर में ही बैठे रहने के लिए मजबूर नहीं करो. लौकडाउन भाई, मुझे बाहर जा कर खेलने का मौका दो, प्लीज.

सोहम घोष, 7 वर्ष, मुंबई

यह कोकोनट लैंप है, इसे हमारी 13 वर्षीय पाठिका तन्वी आर देसाई ने मुंबई से हमें भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031
writetochampak@delhipress.in 8657402248
www.facebook.com/ChampakMagazine
http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारे और उन के फिंगर प्रिंट्स

मनुष्य के पास उंगलियों के निशान यानी फिंगर प्रिंट्स होते हैं जिन के दो उद्देश्य हैं, वे किसी चीज को पकड़ने में मदद करते हैं और इन फिंगर प्रिंट्स या उंगलियों के निशान में जो संवेदनशील खांचे होते हैं, वे हमें बनावट को महसूस करने में भी सहायक बनते हैं. चिंपैंजी और गोरिल्लाओं के भी हमारी ही तरह उंगलियों के निशान होते हैं, क्योंकि वे हमारे सब से करीबी जीवित रिश्तेदार हैं. शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि कोआला भालुओं के भी हम मनुष्यों की तरह ही फिंगर प्रिंट्स यानी उंगलियों के निशान होते हैं.

कोआला नखरे कर के खाने वाले प्राणी हैं जो सिर्फ एक खास प्रकार के यूक्लिप्टस यानी नीलगिरी के पत्ते खाते हैं. इस के लिए वे अपने फिंगर प्रिंट्स का इस्तेमाल करते हैं जो इन्हें खाने से पहले पूर्णरूप से पत्तों को परखने का अवसर देते हैं.

उन के फिंगर प्रिंट्स बिलकुल ही मनुष्यों के फ्रिंगर प्रिंट्स की तरह ही दिखाई देते हैं. वे अपनी उंगलियों का इस्तेमाल पेड़ों या शाखाओं को पकड़ने के लिए भी करते हैं. शोधकर्ताओं का कहना है कि कोआलाओं के फिंगर प्रिंट्स मनुष्यों के फिंगर प्रिंट्स के इतने समरूप हैं कि वे आसानी से धोखा खा जाते हैं कि हमारे कौन से हैं और उन के कौन से हैं.

कोआला सिर्फ यूक्लिप्टस के पत्ते खाते हैं और एक दिन में एक किलोग्राम तक खा सकते हैं. ज्यादातर जानवरों के लिए यूक्लिप्टस जहरीला होता है, लेकिन कोआलाओं के पास एक खास तरह के रेशेदार पाचनअंग काएकुम होता है जो पत्तों में मौजूद रसायनों के जहर को निकाल बाहर करता है.

ड्रिंक का झूठ

कहानी • आशा शर्मा

कमला को टैलीविजन देखने का बहुत शौक था.

लेकिन उसे फिल्म या धारावाहिक देखना पसंद नहीं था, उसे तो इन कार्यक्रमों के बीचबीच में आने वाले विज्ञापन बहुत लुभाते हैं.

उसे विज्ञापनों को देखने का इतना शौक था कि उन्हें देखते हुए वह अपनी पलकों को भी कभी नहीं झपकाती थी.

लुभावने दावे करने वाले विज्ञापन देखने के बाद कमला उन उत्पादों को खरीदने के लिए अपने पापा से जिद करती थी.

पापा कभी उस की पसंद की चीज खरीदने के लिए मान जाते तो कभी नहीं मानते. जब कमला की मनपसंद चीज पापा खरीद देते तो वह ''अच्छे पापा,'' कह कर अपने पापा के गले में झूल जाती और जिद पूरी न होने पर मुंह लटका कर किनारे कोने में बैठ जाती और सुबकती रहती.

कई दिन तक वह पापा से रूठी भी रहती.
लेकिन फिर वह किसी नए विज्ञापन को देखती तो पुरानी चीज को भूल कर नई चीज के लिए जिद किया करती.

इन दिनों लौकडाउन के कारण स्कूल जाना नहीं हो रहा है, इसलिए कमला को टीवी देखने का भरपूर अवसर मिल रहा है.

एक दिन कमला की निगाह लंबाई बढ़ाने वाले एक पाउडर के विज्ञापन पर पड़ी.

उस ने देखा कि एक बच्चा दूध में पाउडर मिला कर गटागट पी रहा है और देखते ही देखते अपने साथियों से लंबा हो जाता है.

कमला ने खुद को देखा तो उसे अपनी लंबाई उम्र के हिसाब से कम लगी.

''राइसा भी तो मेरी ही क्लास में पढ़ती है, लेकिन बास्केटबौल खेलते समय कितनी आसानी से बौल को बास्केट में डाल देती है और मुझे देखो, बस उछल कर ही रह जाती हूं, कितना हंसते हैं सब

लोग,'' कमला को गेम्स पीरियड याद आ गया.

''मैं भी ये ड्रिंक पी कर अपनी लंबाई बढ़ाऊंगी और स्कूल खुलने पर सब को चौंका दूंगी,'' मुसकराते हुए कमला ने मन ही मन तय कर लिया कि यह मांग वह पापा से पूर्ण कराएगी.

शाम को पापा जैसे ही औफिस से आए, कमला ने अपनी फरमाइश उन के सामने रख दी.

''पापा, मुझे भी वह लंबा होने वाला पाउडर ला कर दो न. स्कूल खुलते ही जब सब मुझे लंबा देखेंगे तो कितने हैरान होंगे,'' कमला कल्पना में खुद को राइसा से भी लंबा देख रही थी.

''ड्रिंक पीने से कोई लंबा नहीं होता. ये सब सामान बेचने के तरीके हैं. विज्ञापन जादू का जाल होते हैं.''

पापा ने उसे समझाया लेकिन कमला ने उन की कही एक भी बात नहीं सुनी.

''मेरे सब दोस्त मुझे बौनी कह कर चिढ़ाते हैं. मैं लंबा होना चाहती हूं, मम्मी प्लीज, कहिए न पापा से,'' कमला लगभग रोंआसी हो कर बोली.

''ला दीजिए ना बच्चे को. इस बहाने दूध ही पी लेगा,'' मम्मी ने उसे चुप करवाते हुए पापा से उस की सिफारिश की. आखिर पापा को मानना पड़ा.

अगले ही दिन चौकलेट के स्वाद वाला लंबाई बढ़ाने का दावा करने वाला पाउडर कमला के हाथ में था.

कमला ने तुरंत एक बड़ा गिलास दूध से भरा और दो चम्मच पाउडर और इतनी ही चीनी मिला कर एक सांस में पी गई. दूध पीते समय वह खुद को लंबा होता हुआ महसूस कर रही थी.

पाउडर वाला दूध पीने के बाद उसे भूख नहीं लगी तो उस ने रात को खाना नहीं खाया लेकिन देर रात उसे भूख महसूस हुई. उस ने फिर से एक दूसरा दूध से भरा और उस में पाउडर और चीनी मिला कर गटागट पी गई.

अभी आधी रात ही हुई थी कि कमला के पेट में गुड़गुड़ी होने लगी. वह भाग कर टौयलेट गई. इस के बाद तो वह सो ही नहीं सकी, बारबार टौयलेट ही आतीजाती रही.

सुबह कमला बहुत देर से उठी. उठते ही उस ने एक गिलास दूध फिर पी लिया, उस में वही लंबा होने वाला ड्रिंक पाउडर मिला कर. इस बार एक घूंट पीते ही कमला को उबकाई आ गई, लेकिन वह किसी तरह अपनी नाक बंद कर पी गई. उसे राइसा को दिखाना था कि कोई उस से भी लंबा हो सकती है.

मिला कर कमला को देने लगीं. इस से कमला की तबीयत ठीक रहने लगी.

एक महीने बाद कमला ने अपनी लंबाई मापी. उसे कोई विशेष फर्क नहीं लगा.

उस ने दोतीन बार उचकउचक कर चैक किया, लेकिन लंबाई तो जितनी थी उतनी ही रही.

''इस तरह उछलने से लंबाई नहीं बढ़ती, शरीर तो अपनी गति के अनुसार ही बढ़ेगा न,'' मां ने हंसते हुए कहा.

''यानी यह पाउडर बेकार है?'' कमला ने आश्चर्य से पूछा.

''नहीं, ऐसी बात नहीं है. पाउडर बेकार नहीं है लेकिन इस के दावे पूरी तरह से सच नहीं हैं,'' मां ने उसे समझाया. यह सुन कर कमला निराश हो गई.

पापा दरवाजे पर खड़े उन की बातें सुन रहे थे.

''तुम ने साइंस में पढ़ा था न कि हमारे शरीर का विकास हमारी आनुवांशिकता पर निर्भर करता है

दूध पीने के दो घंटे बाद ही कमला को उल्टी हो गई. अब तो वह पूरी तरह से निढाल हो गई.

''लगता है ये पाउडर तुम्हें सूट नहीं कर रहा था या कहीं तुम इस की मात्रा जरूरत से ज्यादा तो नहीं पी रही हो,'' मां को शंका हुई तो उन्होंने पूछा.

हालांकि कमला वही कर रही थी जो मां ने कहा था लेकिन फिर भी वह मना कर गया. वह जल्दीजल्दी लंबा जो होना चाहती थी.

अब मां ने ड्रिंक की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली. वे सुबहशाम केवल आधा गिलास दूध और एक चम्मच चीनी इतने ही पाउडर के साथ

और बहुत कुछ हमारी भौगोलिक परिस्थितियों पर भी,'' पापा ने कमला के पास आते हुए कहा.

''तो क्या मैं कभी लंबी नहीं हो सकती? हमेशा बौनी ही रहूंगी,'' कमला ने पूछा.

''लंबाई किसी पाउडर से नहीं बल्कि हमारे जीन्स से निर्धारित होती है. हां, थोड़ाबहुत फर्क हमारे प्रयासों से पड़ सकता है जैसे कि आउट डोर खेल और योगा, व्यायाम, कसरत आदि से.

लेकिन किसी तरह के बाहरी प्रोडक्ट से इस का कोई लेनादेना नहीं. ये पाउडर सिर्फ दूध के स्वाद को बदल सकते हैं, हमारे जीन्स नहीं. तुम कल सुबह से ही कसरत व्यायाम और योगा शुरू कर दो. फर्क अवश्य पड़ेगा. लंबाई बढ़े या न बढ़े, स्वास्थ्य पर तो फर्क जरूर पड़ेगा,'' पापा ने कमला को विश्वास दिलाया.

''आप ठीक कहते हैं. यह बोतल खत्म होने के बाद मैं और ड्रिंक पाउडर लाने की जिद नहीं करूंगी और कल से ही सुबह की सैर शुरू कर दूंगी. उस के बाद धीरेधीरे व्यायाम भी करूंगी,'' कमला बोली.

उसे ड्रिंक का झूठ और पापा की बात दोनों ही समझ में आ गई थीं. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : रास्ता बताओ :

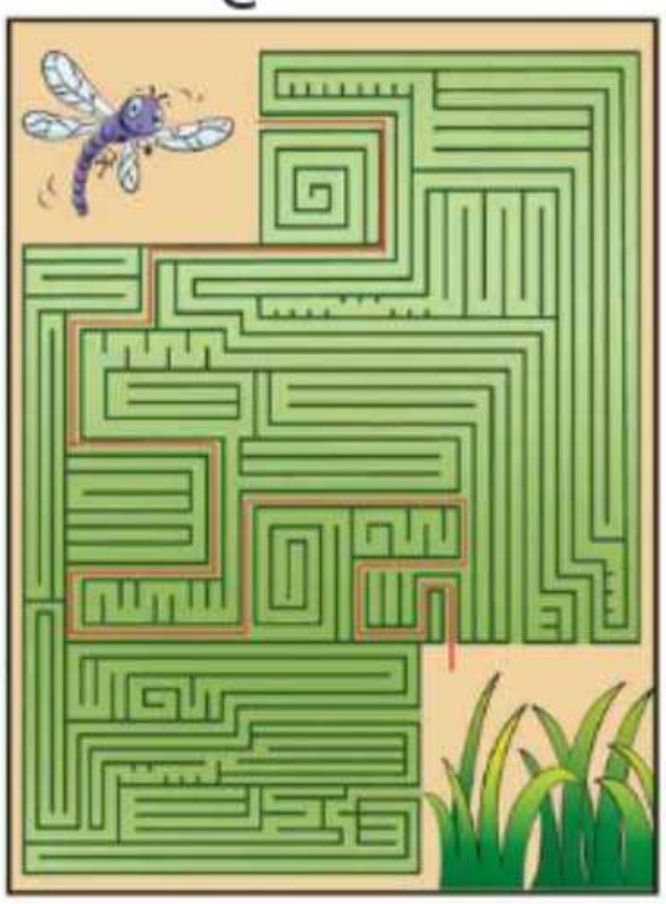

पृष्ठ 25 : ढूंढें और गिनती करें :

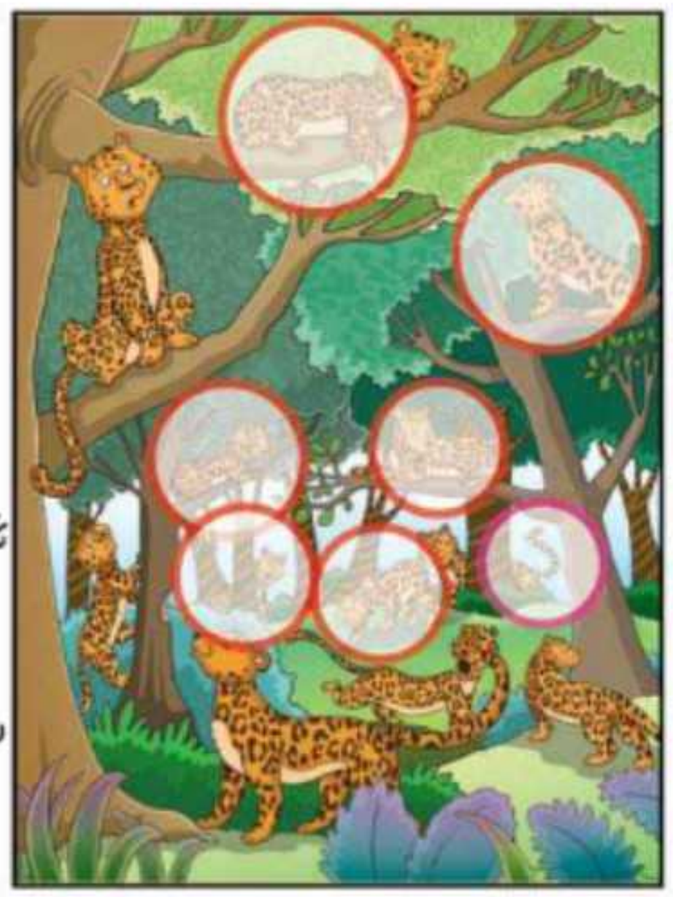

पृष्ठ 29 : गिनती करें :

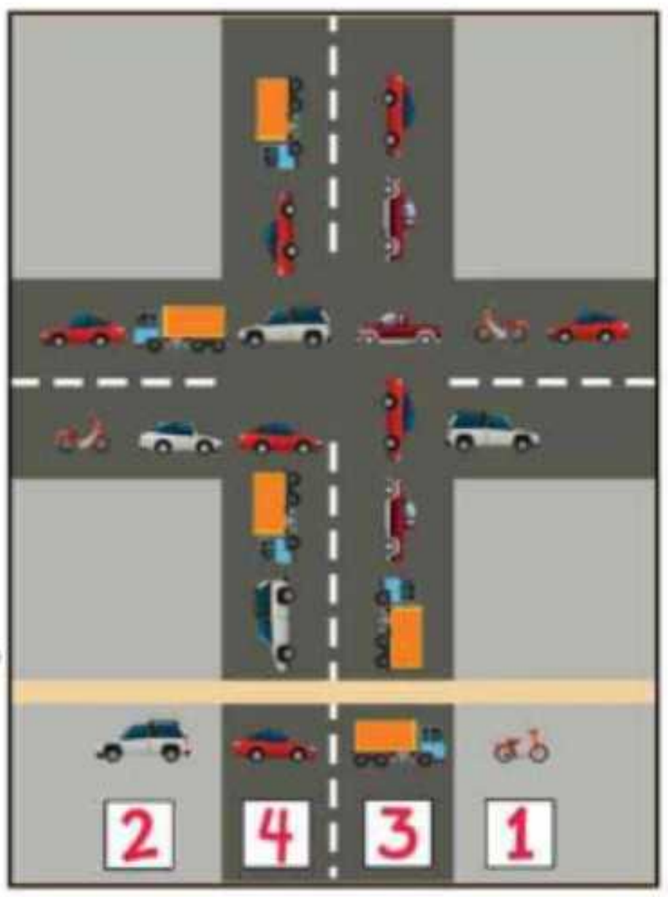

पृष्ठ 33 : ऊपर से यह कैसे दिखता है? :

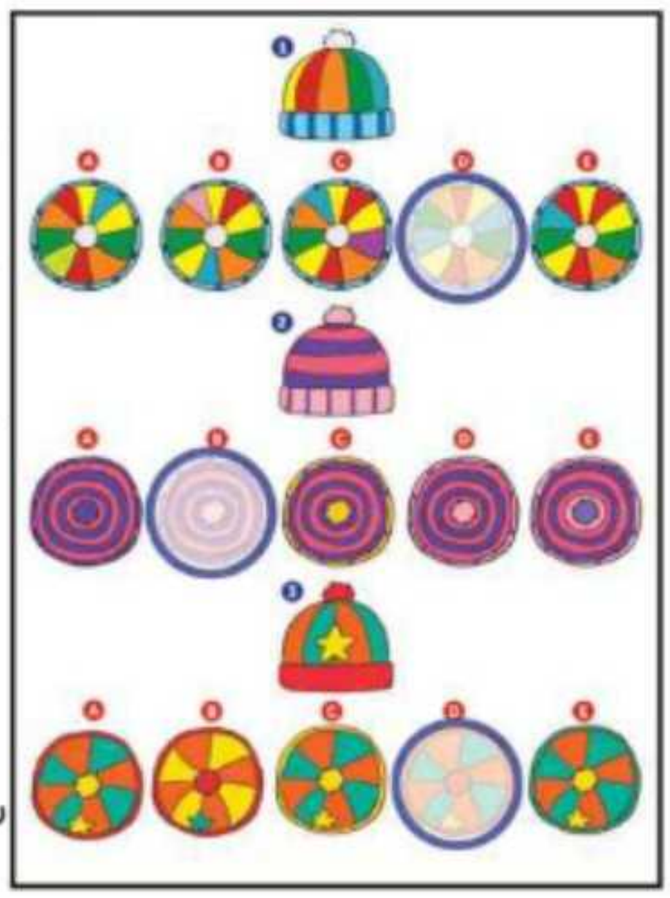

पृष्ठ 42 : पत्थरों को रंगें :

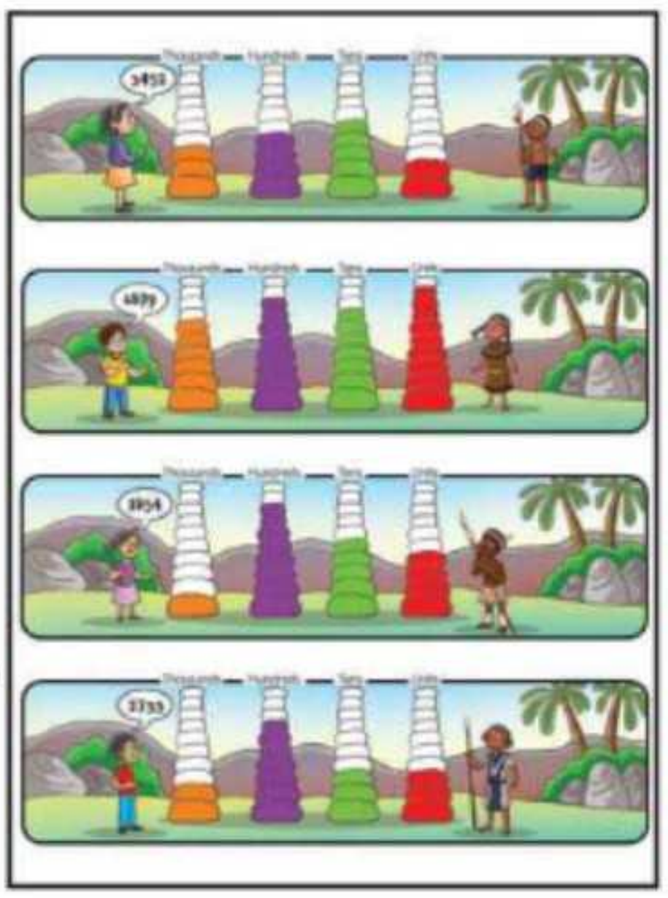

पृष्ठ 43 : छिपे चित्र ढूंढें :

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN · CHAMPAK · सरिता · गृहशोभा · चंपक · मुक्ता · सरस सलिल · फार्मा फूड · सत्यकथा · मनोहर कहानियां
ગૃહશોભા · ચંપક · सरस सलिल · गृहशोभिका · চাঁপক · সলিলু · গৃহশোভা · ಆರೋಗ್ಯ · சம்பக் · சரல் · గృహశోభ · ചിങ്കാരി
ગૃહશોભા · ગૃહગોડ · ચમ્પક્ · સલિલુ · ચમ્પક્ · Highlights CHAMPS · Highlights Genies · MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/11/2021. Pgs. 52.

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, मिसेज शर्मा हैं परेशान, क्योंकि शर्मा जी को कब्ज़ ने कर रखा है हैरान।

अरी भाग्यवान, मिसेज शर्मा को बताएं, बाजार से स्टोमाफिट लाएं, शर्मा जी को पिलाएं और कब्ज़ दूर भगाएं।

पेट की और टेंशनों से

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

गर्भधारण, हुकवार्म, पेट में कीड़े, मासिक धर्म, साधारण कमजोरी, बीमारी या संक्रमण, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट

शहद सा गाढा संतरे सा स्वादिष्ट

300ML, 450ML

परिवार के हर उम्र के— सदस्य के लिए लाभकारी...

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)